काशी धार्मिक दर्शन यात्रा कापी ४

१ नव दुर्गा यात्रा

२ नव गौरी [illegible] दुर्गा यात्रा

३ नव गौरी यात्रा

४ ११ [illegible] भैरव यात्रा

५ [illegible] दुर्गा यात्रा

६ [illegible] ग्रह यात्रा

७ अष्ट भैरव यात्रा

८ [illegible] से अष्ट भैरव यात्रा

(इस कापी का टाइप हुआ)

नं ४-टाइप किया गया



श्री

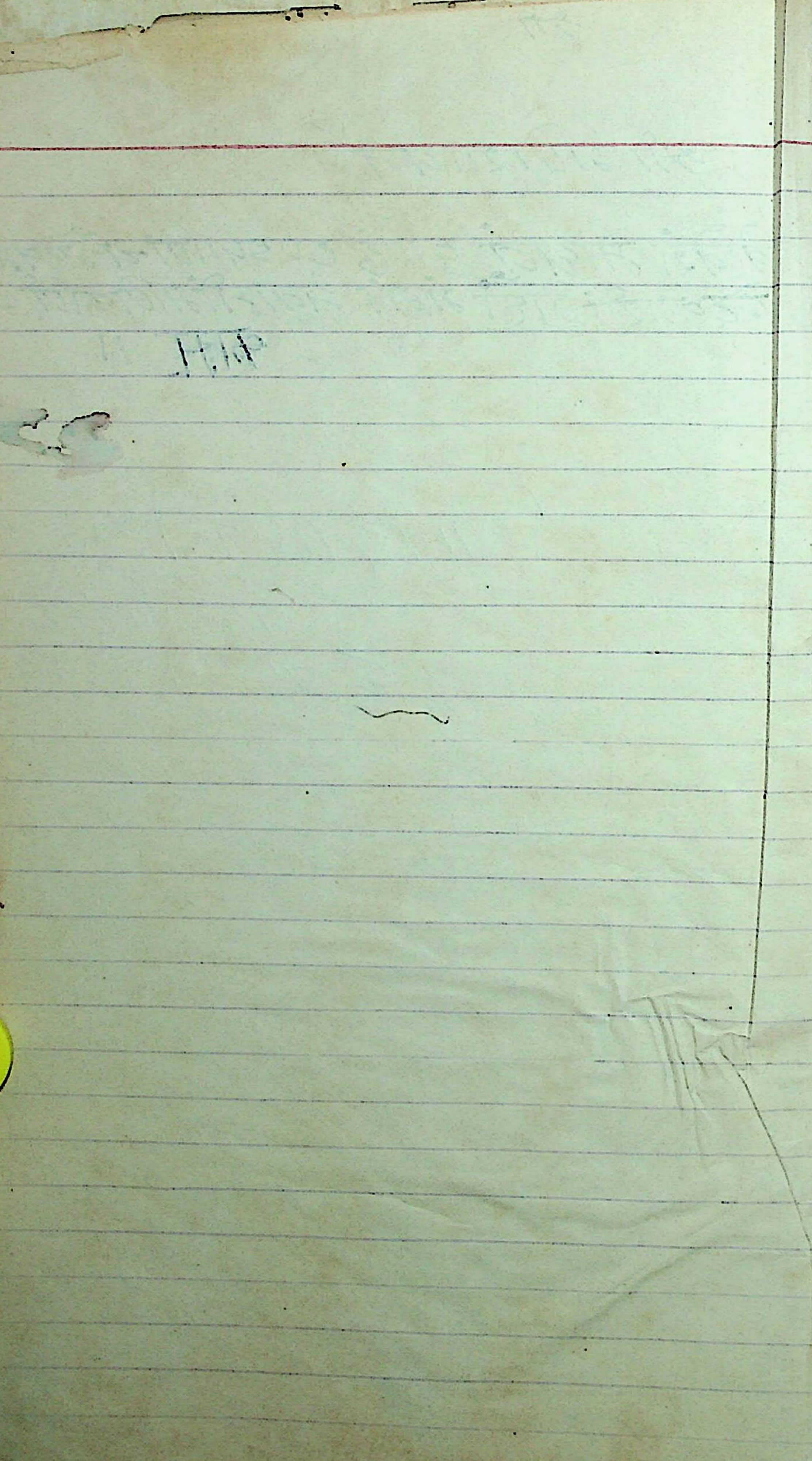
श्री गणेशायनमः

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥

शिवानन्द सरस्वती

धर्म संघ दुर्गा

कुण्ड वाराणसी - ५.५०



१

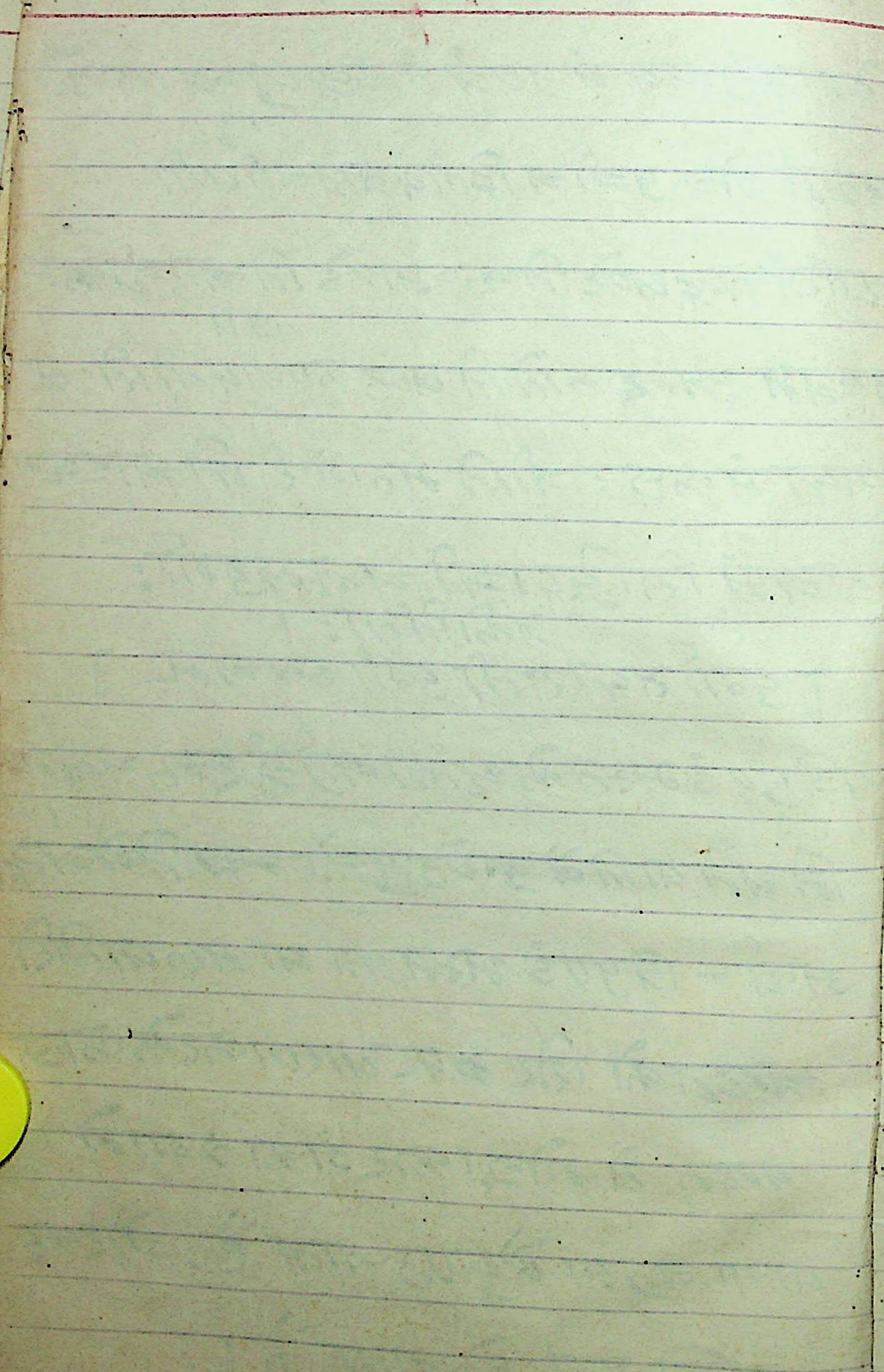
"नवदुर्गा नवगौरी यात्रा" (रूपकुमार टाइप कराएं)
नव दुर्गा - दर्शन यात्रा"

देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥३॥
प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥३॥
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाऽष्टमम् ।
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ।

[दुर्गा सप्तसती दुर्गा कवचम्]

त्रिपुण्डं मस्तके धृत्वा वर्तुलं रक्त चन्दन ।
निधने याति वैकुण्ठे मुक्तो भवति वै जनः ॥

अर्थ - त्रिपुण्ड भस्म का या मलयागिरि चन्दन को शिर पर धारण करके लाल चन्दन से गोलाकार टीका लगाने वाला मनुष्य बैकुण्ठ जाता है, और वह व्यक्ति मुक्त हो जाता है।



"नवदुर्गा नव गौरी यात्रा" (क- एक) रूपान्तर टाइप करें।

दोनों नवरात्रि में प्रति दिन एक गौरी और दुर्गा के एक एक के दर्शन करने की विधी इस प्रकार है:-

काशी खण्ड के सौ अध्याय श्लोक के अनुसार गौरी और दुर्गा सप्तशती दुर्गा कवच के प्रमाण से लिखा जा रहा है।

१ शुक्ल प्रति पदा के दिन

शैल पुत्री दुर्गा देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर ... (ए० ४०/११) में मुहल्ला शैल पुत्री]

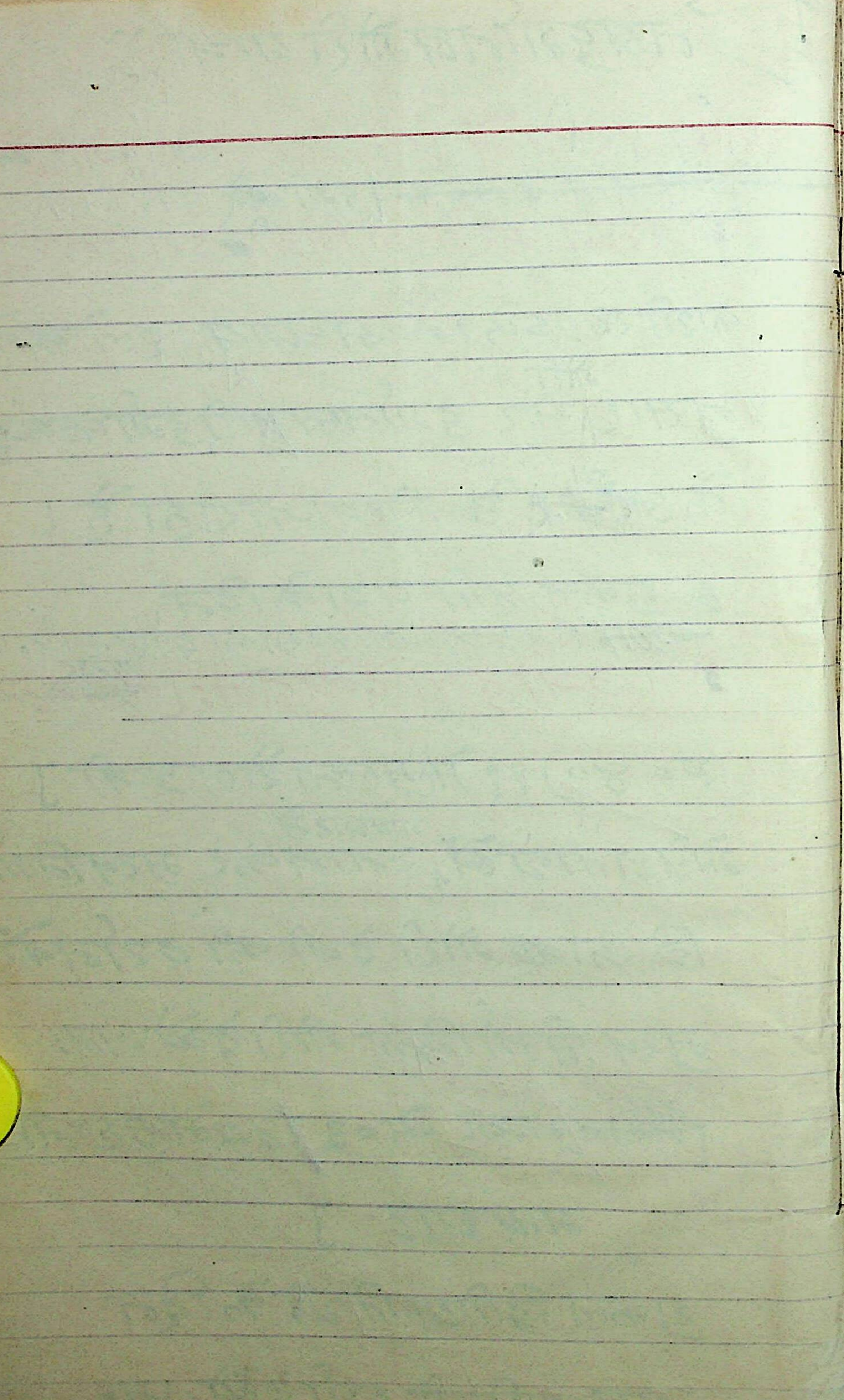
गोप्रेक्षातीर्थ गायघाट में स्नान कर मुख निर्मालिका गौरी देवी की दर्शन करें।

"मुख निर्मालिका गौरी देव्यै नमः"

[मन्दिर संख्या के०३/४२ में मुहल्ला गायघाट]

शुक्ल द्वितीया तिथि के दिन

ब्रह्मचारिणी दुर्गा देव्यै नमः



[मन्दिर संख्या के २२/७२ में है। मु. दुर्गाबाग़ गङ्गा जल से मार्जन करके दर्शन करें।

ज्येष्ठा गौरी देव्यैनमः [मन्दिर संख्या - के० ६३/२४ में है मुहल्ला भूत भैरव]

शुक्ल पक्ष तृतीया तिथी के दिन

"चन्द्रा चित्र घण्टा दुर्गा देव्यैनमः"

[मन्दिर नम्बर सी०के० ३३/३३ में है मुहल्ला चित्र घण्टा दुर्गा गली चौक]

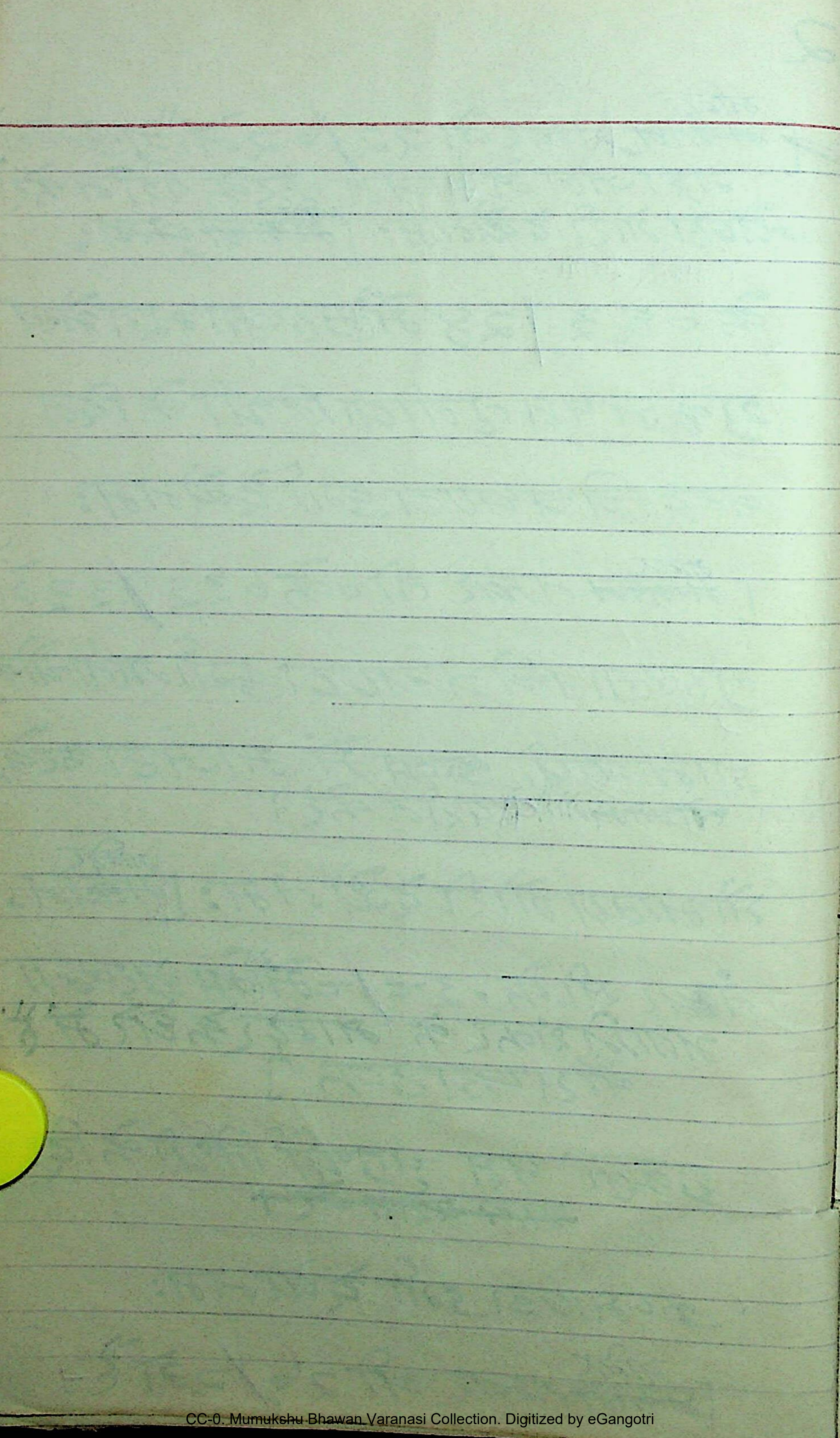
ज्ञान वापी में मार्जन करके सौभाग्य गौरी के दर्शन करें।

सौभाग्य गौरी देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर सी.के. ३८/८ में है मुहल्ला भवानी शंकर के मन्दिर के घेरे में है - बाँस फाटक]

शुक्ल पक्ष चतुर्थी तिथी के दिन

"कुष्माण्डा दुर्गा देव्यै नमः"

[मन्दिर नम्बर बी २७/२ में है



मुहल्ला दुर्गाकुण्ड]

ज्ञानवापी में मार्जन करके ~~दर्शन करें~~ शृंगार गौरी की दर्शन करें।

शृंगार गौरी देव्यैनमः [मन्दिर ~~मकान~~, नम्बर सी०के० ३६/~~८~~ मेंहै मुहल्ला बांस फाटक]

शुक्ल पक्ष पञ्चमी तिथि के दिन दर्शन करें।

स्कन्द ~~माता~~ नागेश्वरी दुर्गा देव्यैनमः [मन्दिर ~~मकान~~, नम्बर जे० ६/३३ में है - मुहल्ला जैतपुरा]

विशाक्ष तीर्थ गङ्गा जी में स्नान करके विशालाक्षी गौरी के दर्शन करें।

विशालाक्षी गौरी देव्यैनमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर डी० ३/~~८~~ ८५ मेंहै मु० मीर ~~घाट~~ विश्वनाथ घाट]

शुक्ल पक्ष षष्ठी तिथि के दिन दर्शन करें।

कात्यायनी दुर्गा देव्यैनमः [मन्दिर ~~मकान~~

नम्बर सी.के. ७/१ पर मैं मोहल्ला

सिन्धियाघाट]

कंकिताघाट में स्नान कर यथासंभव दर्शन करें।
कंकिता देवी की दर्शन करें।

कंकिता गौरी देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर

डी०१/६७ मैं मोहल्ला कंकिताघाट]

शुक्ल पक्ष सप्तमी तिथी के दिन
दर्शन करें।

कालरात्री दुर्गा देव्यै नमः [मन्दिर,

नम्बर डी० ८/३ मैं मु० कालीकीगली]

ज्ञान वापी में मार्जन करके दर्शन करें।
भवानी गौरी की दर्शन करें।

भवानी गौरी देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर

डी० १९/१६, मैं मु० अन्नपूर्णागली।
राम मन्दिर में उत्तराभि-

-मुख है। नोट १८३०२० पुस्तक में लिखी
शिवप्रशाद पाण्डे जी काशी यात्रा नामके पुस्तक में लि-
ते है काशी यात्रा नामके पुस्तक के

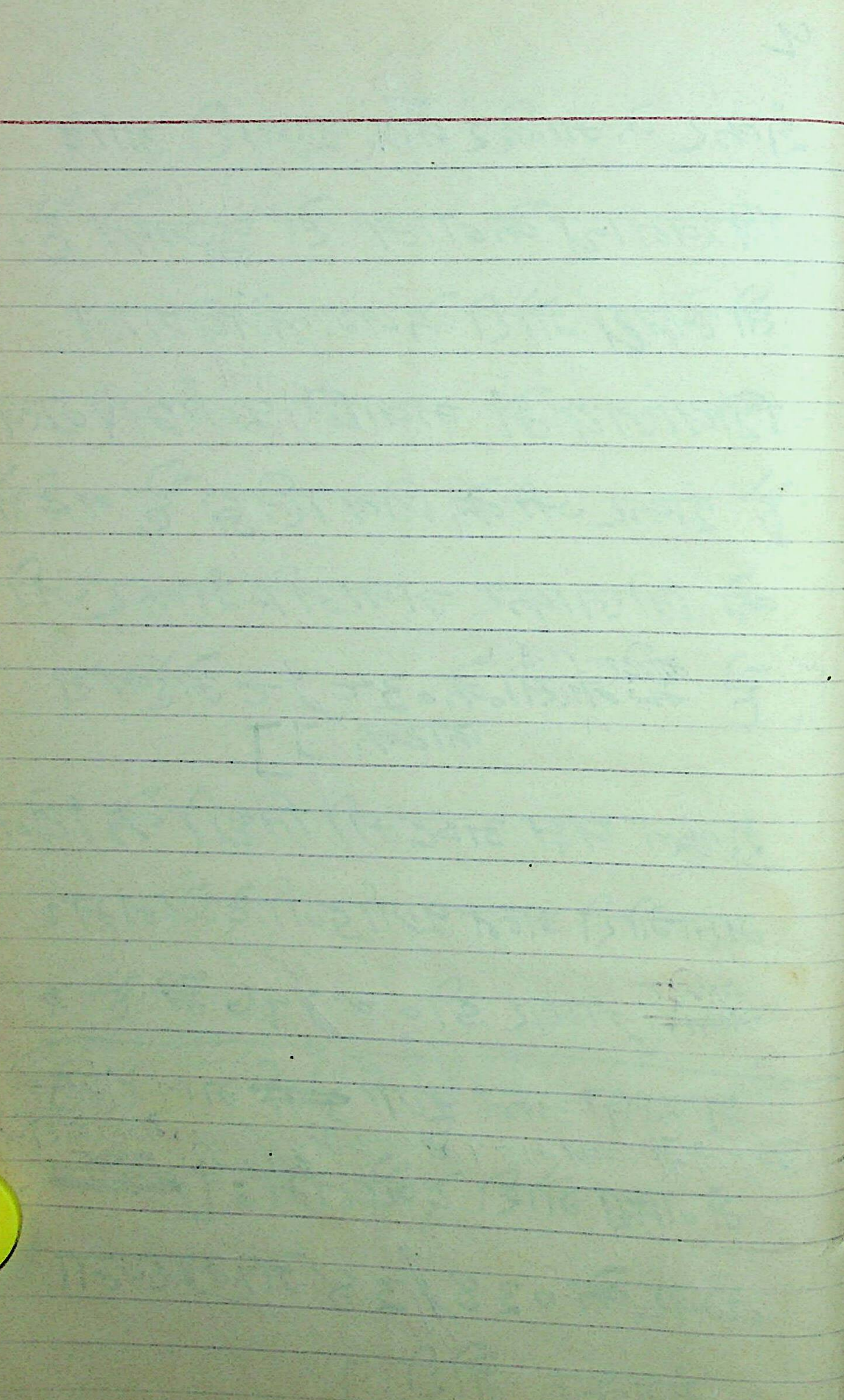
सा० ८० पृष्ठ में लिखा है भवानी-

अन्न पूर्णा १०८ प्रदक्षिणा
यात्रा ।

शंकर के मन्दिर के पुजारी आदि विश्वनाथ के नाम से पूजे जाते हैं। सौभाग्य गौरी के बगल में विशाल शिवालय में भवानी गौरी पूर्वाभिमुख है शंकर जी के शिवलिङ्ग है दोनों को मिलाकर भवानी-शंकर जी कहलाते हैं मन्दिर नम्बर सी० के० ३८/८ में हैं बाँस फाटक]

शुक्ल पक्ष अष्टमी तिथी के दिन महागौरी अन्नपूर्णा दुर्गा देव्यै नमः मन्दिर नम्बर डी० ९/१७ में है।

मुहल्ला अन्नपूर्णा गली मन्दिर
विन्दुतीर्थ पञ्चगङ्गा घाट में स्नान कर मङ्गला गौरी को दर्शन करें।
मंगला गौरी देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर के० २४/३४ में हैं मुहल्ला मंगला गौरी]



शुक्ल पक्ष नवमी तिथी के दिन दर्शन करें।

सिद्धिदा सिद्धेश्वरी दुर्गा देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर के० ६ / २८ में है मुहल्ला बंगाली टोला]

लक्ष्मी कुण्ड में स्नान या मार्जन करके दर्शन करें।

महालक्ष्मी गौरी देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर डी० ५२ / ३ में है मुहल्ला लक्ष्मी कुण्ड लक्सा रोड में है]।

नवदुर्गा और नव गौरी देवी के दर्शन करने का विधान इस प्रकार है।

नवदुर्गा, नवगौरी प्राति-दिन ~~एक, एक~~

दोनों देवियों की शास्त्र विधी ~~से~~ अनुसार ~~और भा~~

~~नित्य भोर~~ भूखा में ~~प्रातः शौच कर्म से निवृत्त~~

प्रातःकाल स्नान करके दर्शन करें। ~~दर्शन करें~~

~~होकर बिना जल पान किये हुए~~।

[विवरण] नवदुर्गा नवगौरी यात्रा में पहले दो सौ यात्री साथ में चलते थे आज ~~घोर कली काल~~ में भी २७-९-९२ को भी १७५ पचहत्तर यात्री साथ में यात्रा कर रहे थे।

(पर कहे हुये सामग्री को साथ में लेकर कीर्तन करते हुये
[illegible]शी का महामन्त्र यह है। हर हर महादेव शम्भो काशी-
विश्वनाथ गङ्गे।

इस मन्त्र का कीर्तन करते हुए, यात्रा में धीरे-धीरे
चलने से किसी भी प्रकार का विघ्न
नहीं आता, पैर में काटा, शीशा
कील आदि नहीं चुभता और शरीर में थका-
वट नहीं आती, मन में उत्साह
दृढ़ता है। कितना दूर चले यह भी
मालूम नहीं होता, जैसा लगता है देवी जी शरीर में
आपकी नवदुर्गा और नव गौरी यात्रा यह सम्पन्न होती है।

यात्रा जिस स्थान पर सम्पन्न होती है उसी स्थान
पर वैदिक ब्राह्मण से संकल्प करवायें। संकल्प
के बाद यथा शक्ति, दक्षिणा, बस्त्र एवं सीधा
देना चाहिए। और सन्त, महात्माओं को दूध
फल मिष्ठानादि देकर दोनो देवियों का स्मरण
करते हुए अपने-अपने घर के लिए प्रस्थान करें।
अपने घर में जाकर बड़ों का पैर स्पर्श करते हुए आशी-
र्वाद ले

हरि ॐ तत्सत
गौरी दुर्गार्पणमस्तु।
हर-हर महादेव।

५.

काशी की सीमा

मुखं



पर कहे हुये सामग्री को साथ में लेकर कीर्तन करते हुये
री का महामन्त्र यह है। हर हर महादेव शम्भो काशी-
विश्वनाथ गङ्गे।

इस मन्त्र का कीर्तन करते हुए, यात्रा में धीरे-धीरे चलने से किसी भी प्रकार का विघ्न नहीं आता, पैर में काँटा, शीशा, कील आदि नहीं चुभता और शरीर में थकावट नहीं आती, मन में उत्साह रहता है। कितना दूर चले यह भी मालूम नहीं होता जैसा लगता है देवी जी शरीर में ऐसी शक्ति और भक्ति की प्रदान की है कि घर, दुकान परिवार सम्बन्धियों सभी को भूल जाता है। भूख, प्यास भी नहीं लगता।

वह आनन्द प्राप्त करने के लिए पुनः पुनः काशी की यात्रा करता है।

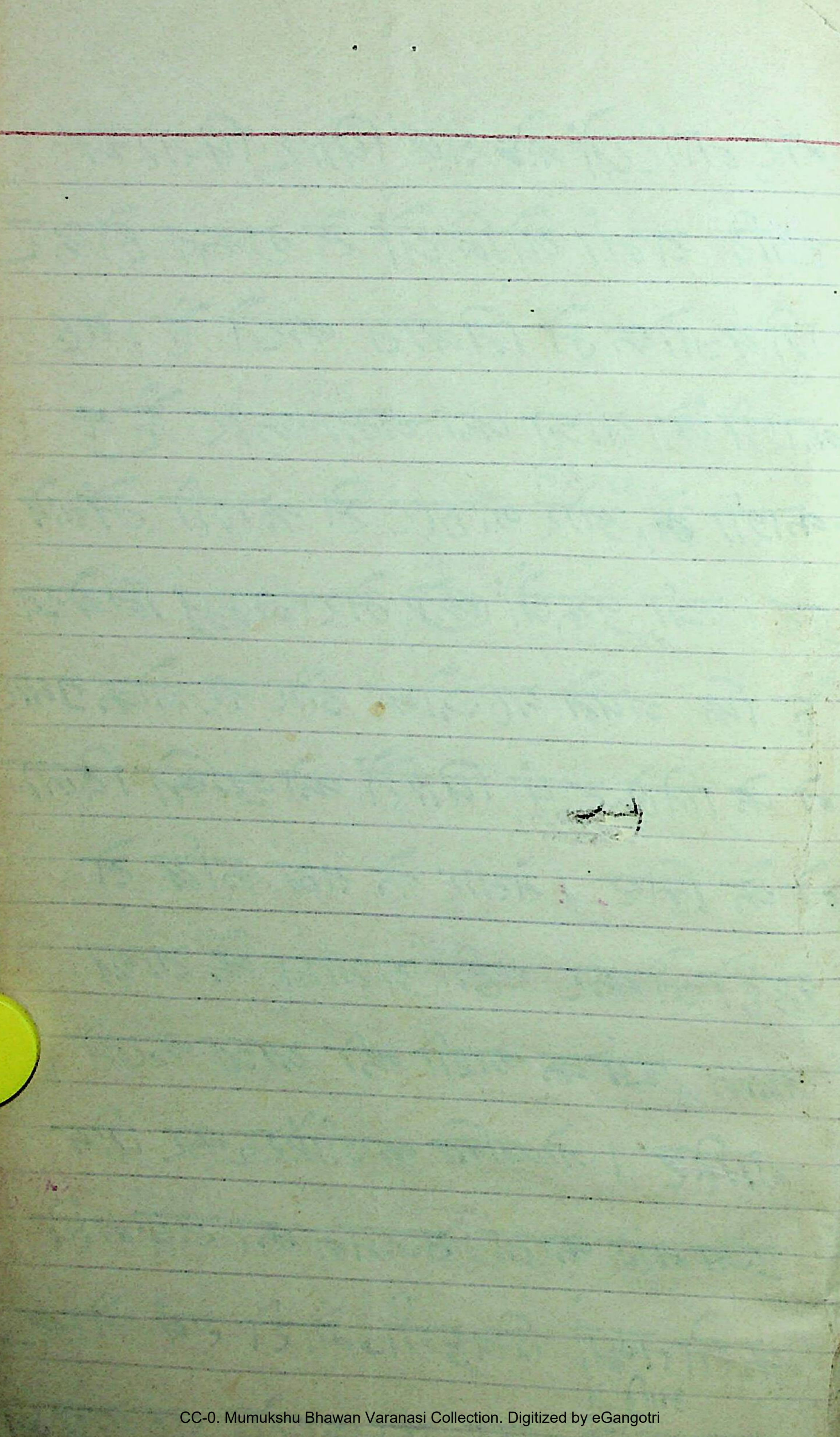
नव रात्रि में प्रत्येक मन्दिर में सजावट करते है। प्रत्येक मन्दिरों में दर्शन

पूजन करने वाले नर नारियों के कतार लगी रहती है। काशी के पञ्च क्रोशी, नव दुर्गा आदि यात्राओं में मुझे जो चमत्कार मिला, और जो आनन्द प्राप्त हुआ उसका वर्णन मैं अपने मुख से नहीं कर सकता, क्यूँ कि मेरे स्थूल शरीर में अनेक बार अनेक रोग आये रोग आते हैं। मैंने काशी की यात्रा प्रारम्भ की यात्रा में ही रोग अच्छे होने लगे यात्रा पूरा करते ही रोग नष्ट होगये। यह काशी की यात्राओं का चमत्कार है। जो नर नारी श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर दृढ़ विश्वास पूर्वक काशी की यात्रा करते हैं उनको धर्म अर्थ

वाराणसी (नगर) यात्रा
ओंकारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा
केदार अन्तर्गृही यात्रा
12 बार सूर्य यात्रा, 12 ज्योतिर्लिङ्ग यात्रा,
सप्तपुरी यात्रा, अङ्ग यात्रा, 42 लिङ्ग यात्रा, नवगौरी यात्रा नवदुर्गा यात्रा।
एकादश ~~यात्रा~~ रुद्र यात्रा, अविमुक्त यात्रा

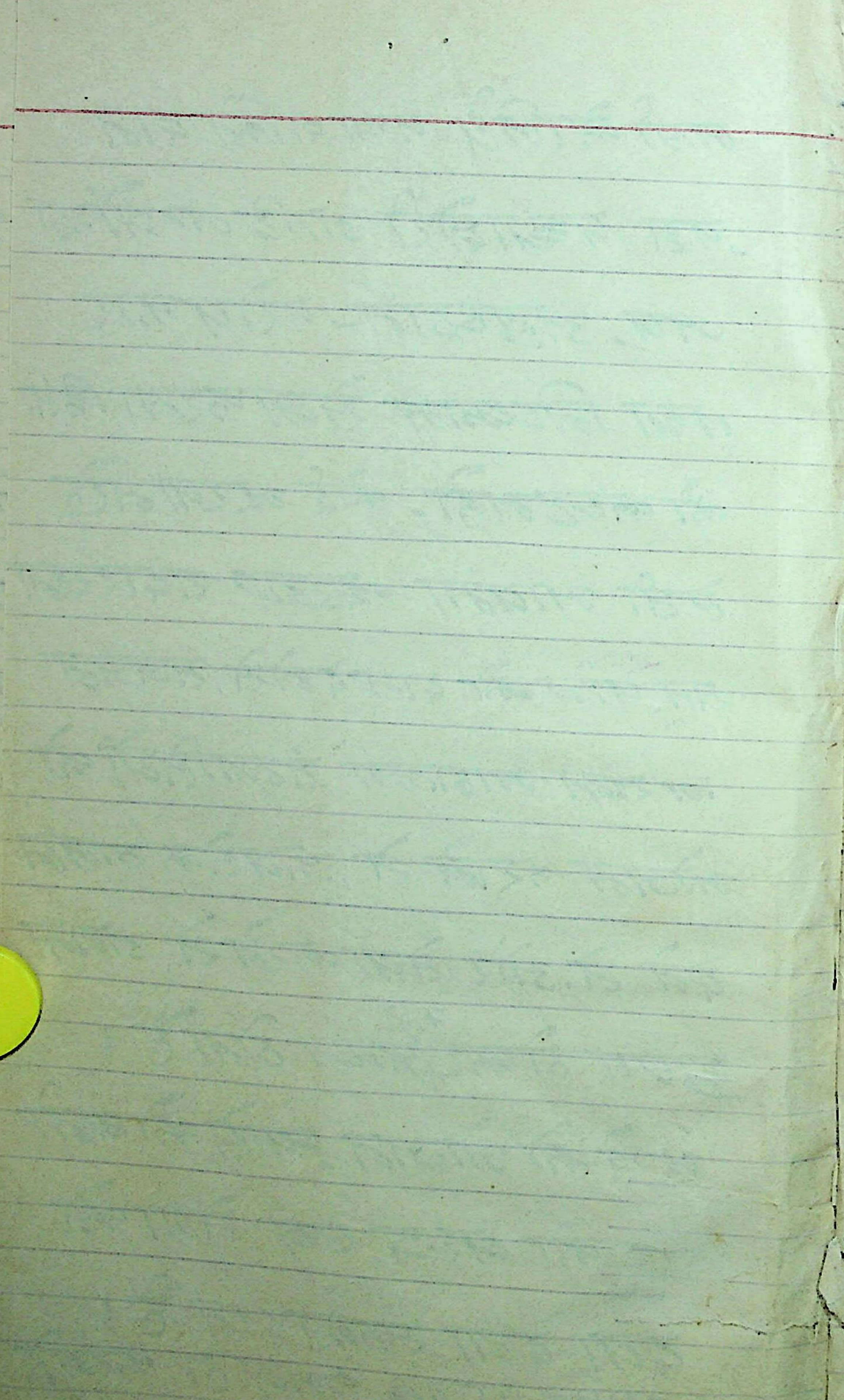
मोक्ष अवश्य प्राप्त होते है। यात्रा
करने वाले व्याक्तीयों के सब मनोरथ
पूर्ण होते है। और सर्वार्थ सिद्धी
योग प्राप्त करलेते हैं। [नोट २]
कुल के उद्धार के लिए और पिता, परापिता-
-मह, भाई, बन्धु, मित्र को मुक्ति दिला-
नेके उद्देश्य से एवं हमारे कुल में
जो व्यक्ति अकाल मृत्यु से शरीर छोड़े है।
उन सब को मोक्ष दिलाने के लिये, उन उन
के स्वयं का नाम, अपना संकल्प करके यात्री
छप्पन विनायक, भैरव यात्रा एवं
अन्तर्गृही पञ्च कोशी आदि यात्रा
करते है और ब्राह्मणों द्वारा वरण
करके ब्राह्मणों को यात्रा करने भेजते
है। यात्रा स्वयं करने वाले को तथा
यात्रा में ब्राह्मणों को भेजने वाले

नर, नारियों के सब पितर, पिशाच
आदि सभी योनियों से मुक्त होकर
शिवलोक में निवास करते है। यह
काशी की यात्रा का माहात्म्य है।
काशी में रहने वाले, और बाहर से काशी में आये
हुए। स्त्री, पुरुषों से मेरा नम्र निवेदन
है कि अपने यह लोक और परलोक सुधार
ने के लिए एवं पितरों को मुक्ति दिला-
ने के लिए, संसार के सब कार्य से
छुट्टी लेकर बड़े उत्साह के साथ
प्रयत्न पूर्वक काशी की यात्रा करें।
। जो व्यक्ति काशी में रहकर शिव
पूजा नहीं करता, उस व्यक्ति की सङ्गति नहीं करनी चाहिए।
तथा शिव, दुर्गा, गौरी एवं भैरव
आदि में गङ्गा में श्रद्धा नहीं रखते उस मनुष्य



को जीता हुआ भी मरा हुआ समझना चाहिये
है वह व्यक्ति तो बार-बार दरिद्र
कुल में उत्पन्न होने वाला एवं बार
-बार नाना प्रकार के रोग, व्याधि से
व्याकुल रहने वाला होता है। ऐसा सम-
झकर उस से व्यवहार से केवल
उस का सम्बन्ध रखना चाहिए अन्दर
से उस व्यक्ति को उपेक्षा कर देना चाहिए
अपने कल्याण के लिये सदा
साधु सन्त, तत्पर रहना, से यही
प्रश्न करना, मेरा कल्याण कैसे
होगा! और
मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ
मुझे कहा जाना है और मेरा कर्तव्य क्या है। यह बराबर
विचार करके पूछना चाहिए। अगले सफर अर्थात

मार्ग के लिये यथा शक्ति दान
, यज्ञ पञ्चाक्षरी आदि मन्त्रों का
जप, अनुष्ठान, परोपकार
तथा निष्काम सेवा करना किसी
को कष्ट न हो, कोई भूखा न रहे
ऐसी भावना सदा रखना
सुपात्र को दान देने से, सज्जन
सन्त महात्मा संन्यासियों को
भोजन कराने से, आवश्यक सामान
देने से, और सेवा करने से, अनन्त
गुना होकर फल प्राप्त होता है।
भूखे को भोजन, प्यासे को जल
नङ्गे को बस्त्र, एवं रोगी को
दवा देना सुन्दर दान के स्थान है।
जहाँ तक संभव हो करनी
चाहिये।



दाहिने बर्त से नवगौरी यात्रा

नवगौरी दर्शन प्रदक्षिणा यात्रा

अतः परं प्रवक्ष्यामि गौरी यात्रामनुत्तमाम्।

शुक्ल पक्षे तृतीयायां या यात्रा विघ्न-
मर्द्दिदा ॥६८॥

[काशी खण्ड अ० १०० . .]

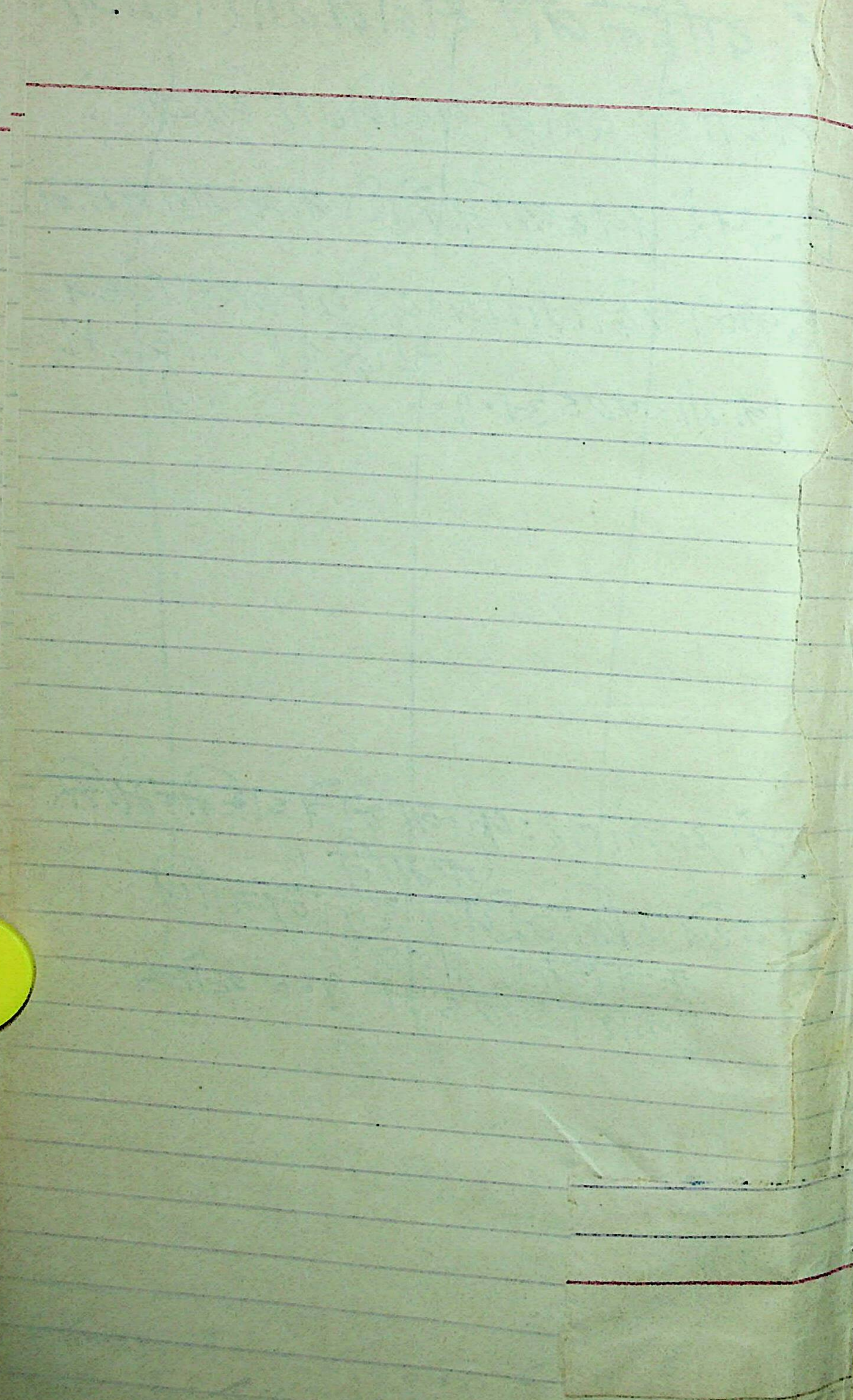
इमां यात्रां नरः कृत्वा क्षेत्रेऽस्मिन्मुक्ति-
जन्मनि।

न दुखै राभिभूयेत इहामुत्रापि
कुत्रचित ॥७२॥

[काशी खण्ड अ० १०० श्लोक

५।१०।

काशी खण्ड के १०० अध्याय में नवगौरी की नाम गौरीतीर्थ और गौरियों के दर्शन यात्रा का फल सहित माहात्म्य का वर्णन है।



दाहिनावर्त से नव गौरी दर्शन यात्रा । ~~एकप्रति टाइपकरें।~~

दाहिने बर्त से नवगौरी दर्शन पूजन प्रदक्षिणा यात्राकरनीचाहिये।

प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर संकल्प लेकर ज्येष्ठा गौरी से यात्रा प्रारम्भ करें। प्रत्येक गौरीकी दर्शन पूजन, कीर्तन करते हुये चले।

हर हर महा देव संभो काशी विश्वनाथ गंगे।

1 ज्येष्ठा गौरी देव्यै नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर के० ६३/२४ मेंहैमुहल्ला भूतभैरव काशीपुरा के पास मेंहै]

[काशी देव्यै नमः [मु० सप्त सागर में है]]
मुख निर्मालिका गौरी जानेकामार्ग इसप्रकार है
ज्येष्ठा गौरी से पूर्व बुलानाला कालभैरव (का दर्शन करके) गाय घाट होतेहुए। मुखनिर्मालिका गौरी की दर्शन करें।]

2. मुखनिर्मालिका गौरी देव्यै नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नंबर के० 2४/४2 मेंहैमुहल्ला गायघाट]

[मुखनिर्मालिका गौरी से दक्षिण दुर्गाघाट पञ्चगङ्गा होते हुए मंगला गौरी] गभस्तीश्वर के मन्दिर में है। अंग दर्शन करें।

3 मंगला गौरी देव्यै नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर के० 24/34 में मुहल्ला मंगलागौरी]

मंगला गौरी देवी से दक्षिण संकटा जी को दर्शन करके विधावासिनी, पितावर। देवी सिद्धेश्वरी होते हुए ललिताघाट में ललिता देवी है।

4 ललिता गौरी देव्यै नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर डी० 1/~~6~~ में मुहल्ला ~~घाट~~। ललिता घाट] ललिता गौरी से पश्चिम धर्मकूप के बगल में ~~विशालाक्षी गौरी~~ है]

5 विशालाक्षी गौरी देव्यै नमः [~~मकान~~ मन्दिर, नम्बर डी० 3/85 में मुहल्ला मीरघाट।

विशालाक्षी गौरी से पश्चिम सरस्वती फाटक, अन्नपूर्णा गली होते हुए



राम मन्दिर में भवानी गौरी है।]
[~~भवानी शंकर आदि विश्वनाथ जी के मन्दिर में~~
६ भवानी गौरी देव्यै नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर
डी० १९/१७ में है मुहल्ला अन्न पूर्णा गली।]
~~विश्वनाथ आदि के दर्शन करके~~
अन्न पूर्णा जी से उत्तर ~~आदि विश्व~~ भवानीशंकर
~~भवा~~ मन्दिर के बगल में सौभाग्य गौरी
है।]
-७ — सौभाग्य गौरी देव्यै नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर सी०के० ३६)८ में है मुहल्ला बाँसफाटक]
बगल में श्रृंगार गौरी है ~~दूसरी~~
~~(विश्वनाथ मन्दिर के उत्तर पश्चिम के कोने में~~] है।
-८ श्रृंगार गौरी देव्यै नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर
सी० के ३७/८ में है मुहल्ला बाँसफाटक]
श्रृंगार गौरी से पश्चिम गोदौलिया ~~लक्सा~~ दस्सा रोड, लक्ष्मी कुण्ड होते हुए ~~लक्ष्मी~~
९ कूर्णी ताम्र विनायक जी के मन्दिर में है।]
९ महालक्ष्मी गौरी देव्यै नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर डी० ५२/३-८ में है
मुहल्ला लक्ष्मी कुण्ड]



स्कन्द जी काशी खण्ड में १०० अध्याय लिखते है। कहते है।
कहते है मुक्ति को जन्म देने वाली नव गौरी यात्रा है
काशी पुरी में जो भक्ति महा गौरी की

पूजन दर्शन, प्रदक्षिणा, यात्रा करने वाले

व्यक्तियों को इस लोक में और परलोक में

कहीं भी दुःख, दरिद्रता और संकट

नही आता एवं नव गौरी यात्रा

करने वाले नर-नारी जहाँ कहीं भी

रहे उन को सुख, संपत्ति तथा

शान्ति प्राप्त करते है। नव गौरी की
तर्पण विधी इस प्रकार है - मुख निर्मालि
का गौरी देव्ये नमः। ज्येष्ठा गौरी देव्ये नम।
सौभाग्य गौरी देव्ये नमः। श्रृङ्गार गौरी देव्ये नमः।
विशालाक्षी गौरी देव्ये नमः। ललीता गौरी देव्ये नमः
भवानी गौरी देव्ये नमः। मंगला गौरी देव्ये नमः
महालक्ष्मी गौरी देव्ये नमः। प्रति दिन प्रातः स्नान के पश्चात
हरि ॐ तत्सत गौर्यार्पणमस्तु।
हर हर महादेव।
हाथ में जल लेकर गौरी के नाम स्मरण करें।



हरीॐ तत्सत गौर्यापण मस्तु
हर हर महादेव ।

काशी दर्शन यात्रा के हमारी मण्डली सन ८०

८० से ~~८६~~ तक ~~लग~~ ५० सौ यात्रियों के

साथ प्रत्येक शुक्ल के द्वितीया के

दिन और दोनों नव रात्रि में नवगौरी

नवदुर्गा यात्रा
विशेष बड़ी उत्सव से नवगौरी

यात्रा होती ~~थी है~~ ~~नवगौरी की~~

~~यात्रा तो आज भी होती है ।~~

परन्तु यात्रीयों की संख्या में कमी होगयी
आज भी १५० यात्री साथ में चलते
~~नव गौरी यात्रा सौ है~~ ~~एक ही~~
~~विधी से करना चाहिए~~
~~अब मण्डल से~~ एक सौ आठ बार ~~यात्रा~~

यात्रा करने के पश्चात नवगौरी यात्रा लिखा गया है ।

~~प्रथम स्करणत्थे~~
~~यहां काशी दर्शन में नवगौरी यात्रा~~
~~विस्तार से लिखा गया है~~ ।

ग्यारह रुद्र भैरव दर्शन प्रदक्षिणा यात्रा ११

"सदैव यस्य भक्तोऽन्यो यमदूताः सुदारुणः।
परमाम्भीरुताम्प्राप्तास्ततोऽसौ भैरवः स्मृतः ॥१४२॥

[काशी खण्ड अध्याय ३१]

अर्थ- ग्यारह रुद्र भैरव दर्शन, पूजन प्रदक्षिणा यात्रा करने वाले नर; नारियों को यम राज के दूतों से दारुण दुःख और भय नही होता। भैरवों के स्मरण करने वाले को शिव भक्ती प्राप्त होती है।

काशी में ग्यारह रुद्र भैरव दर्शन यात्रा

रुद्र भैरव दर्शन यात्रा जाने के पाँच दिन पहले अपने पट्टीदार, पड़ोसी एवं मित्रों को और भगवान के भक्तों को निमन्त्रित करें कि आप भी अपने कल्याण के लिये हमारे साथ यात्रा चलने की कृपा करें। यात्रा जाने के एक दिन पहले यात्रा निर्विघ्न पूर्ण करने के लिये गणेश जी का पूजन करनी चाहिए। पूजन की सामग्री गङ्गाजल, अक्षत, पुष्प, बिल्व पत्र और लड्डू, काला कपड़ा चढ़ाने के लिए रेजगारी पैसा साथ में लेकर मानसिक पञ्चाक्षरी "महामन्त्र जपते हुए, हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गङ्गे" कीर्तन करते हुये काशी के सभी यात्रा प्रारम्भ करें।



ग्यारह रुद्र भैरव दर्शन यात्रा

कामाक्षा देवीजी के पूर्व बगल में

बटुक भैरवजी का मन्दिर है, वहीं से
११ रुद्र भैरव यात्रा प्रारम्भ होती है।
बटुक भैरव जी की पूजा

पुजारियों के अनुसार बैदिक पौराणिक
और तान्त्रीक पुजारी की योग्यतानुसार पूजा होती है।
वेद में भैरवों के पूजा का वर्णन है।
बटुक भैरव जी के पूजा करने के पश्चात्

संकल्प लेकर ग्यारह रुद्र भैरव दर्शन,

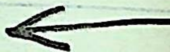
प्रदक्षिणा यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिये

१ बटुक भैरवायनमः [मन्दिर नम्बर

बी० ३१/१२६ में मुहल्ला कामाक्षा]

बटुक भैरव से रुद्र भैरव जाने का

मार्ग इस प्रकार है। कामाक्षा से पूर्व
भेलूपुरा दुर्गाकुण्ड होते हुए दुर्गा जी के




मन्दिर से सटे हुए है। पूर्व बगल में रुद्र भैरव स्वामी मुख है।

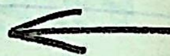
२ रुद्र भैरवाय नमः [मन्दिर नम्बर बी० २८/२ में है मुहल्ला दुर्गाकुण्ड]

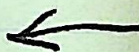
दुर्गाकुण्ड से केदार घाट जाने का मार्ग इस प्रकार है, शिवाला होते हुए केदार घाट के केदारेश्वर के मन्दिर में है। केदारेश्वर के दर्शन करने के पश्चात (६/१०२)

३ केदारेश्वर भैरवाय नमः [मन्दिर नम्बर बी० ६/१०२ में है मुहल्ला केदारघाट]

केदार भैरव से अष्टाङ्ग भैरव जाने का मार्ग केदार घाट से गोदौलिया नई सड़क, सनातन इन्टर कालेज के बगल से सूर्य कुण्ड जाने वाली गली में है। ~~से पश्चिम~~ । है

४ अष्टाङ्ग भैरवाय नमः [मन्दिर नम्बर के सामने डी० ५१/२०२ के सामने भैरव मन्दिर में है मुहल्ला सूर्यकुण्ड]







[सम्बादित्य का दर्शन करें]

सूर्यकुण्ड से पूर्व नई सड़क बाँस फाटक होते हुए सौभाग्य गौरी के मन्दिर के बगल में है]

५ यक्ष भैरवाय नमः [मन्दिर नम्बर सी० के० ३८/८ में है मुहल्ला बाँसफाटक]

यक्ष भैरव से उत्तर में चौक आस भैरव के मन्दिर में है।

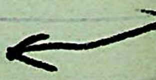
६ आशा भैरवाय नमः [मन्दिर नम्बर सी० के० ५८/५२ में है मुहल्ला आसभैरव]

आसा भैरव से काल भैरव मार्ग बुलानाला, गोल घर होते हुये काल भैरव

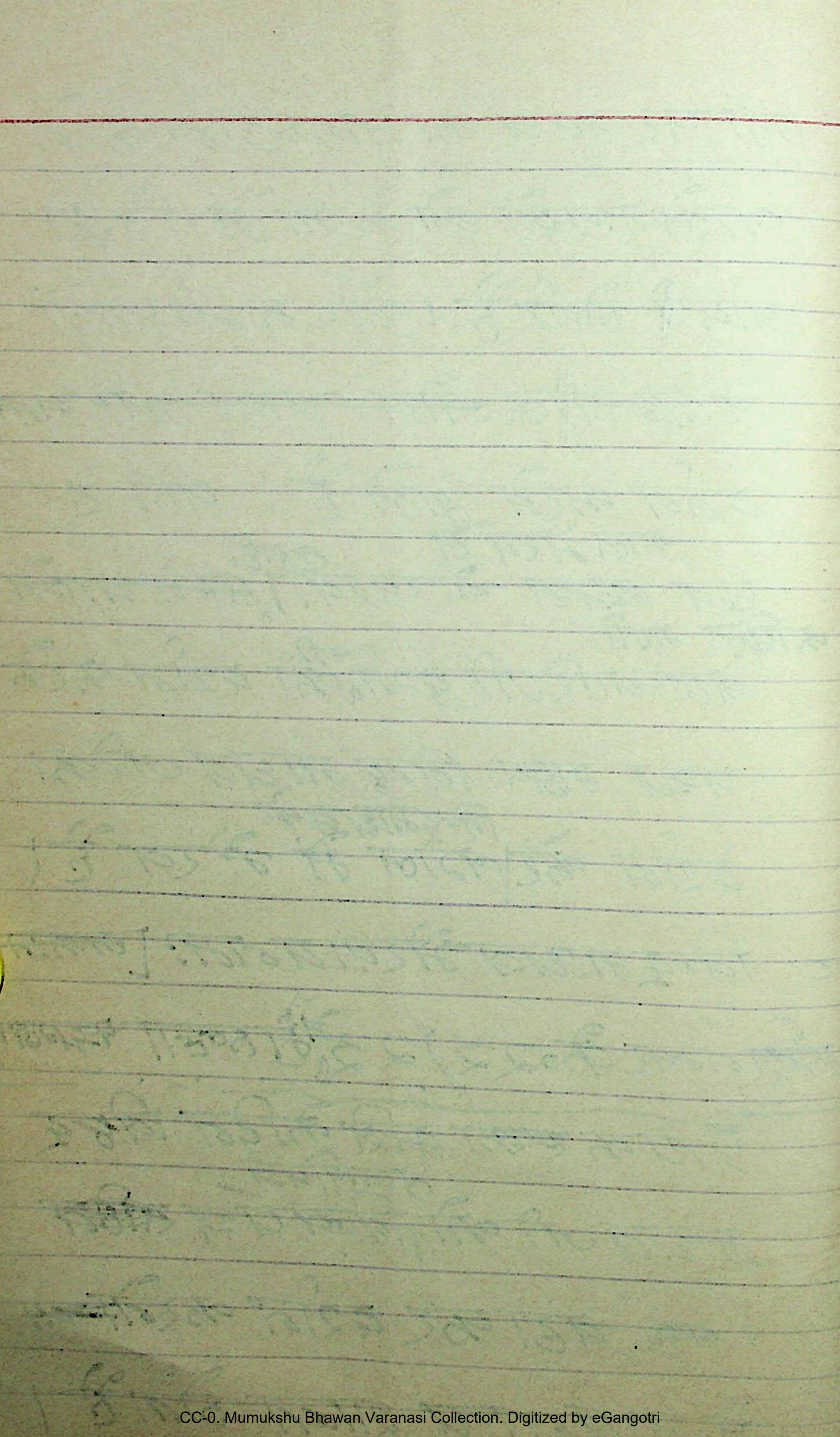
७ काल भैरवाय नमः [मन्दिर नम्बर के० ३२/२ में है मुहल्ला भैरव

काल भैरव जी की भूमी सिद्ध भूमी माना जाता है।





वहाँ पर मन्त्र का अनुष्ठान करने
वाले मनुष्यों को ६ माह में सिद्धी
प्राप्ती होती है। और सभी प्रान्तों
से तान्त्रिक ~~लोग आते भी आत~~
दर्शन करने आते है। वहाँ से
पूर्व काल भैरव से ~~कमक~~ चौखम्बा, ~~दुर्गा घाट~~ में कपिल गली
ब्रह्मचारिणी दुर्गा जी की दर्शन करके
पञ्च गङ्गा विन्दु माधव जी का
दर्शन करें। बिन्दुमाधव के बगल में भैरव है।
८ विन्दुमाधव भैरवाय नमः [~~मकान~~
मन्दिर नम्बर के० २२/२३ में है मुहल्ला पञ्चगङ्गा]
प्रत्येक एकादशी के दिन बिन्दु
माधव जी को तुलसीपत्र ~~विल्व पत्र सहित~~
~~वह~~ चढ़ा कर दर्शन करने ~~से~~
से पाप-ताप शान्त होते है।



और धनु सुख एवँ भक्ति की

बृधी होती है। पञ्चगङ्गा से मंगला

गौरी में गमस्ती श्वर के दर्शन कर

मंगला गौरी के मन्दिर से दाक्षीण

बगल में आनन्द भैरव है।

आनन्द भैरवाय नमः [

मन्दिर नम्बर के 24/22 में है मुहल्ला मंगला

गौरी के दाक्षीण बगल के आनन्द भैरव गली में

इन के दर्शन करने वाले नर नारीयों को शिव शक्ति है।

(शिव भगवान की भक्ति प्राप्त होती है)

आनन्द भैरव से दाक्षीण शंकटा जी

के दर्शन करके नीलकण्ठ मीरघाट

होते हुए वृद्धादित्य के मन्दिर के

पश्चीम बगल में नृत्य भैरव

आनन्द भैरव के नाम से

प्रसिद्ध है।

नृत्य भैरवाय नमः [मन्दिर नम्बर

सी॰ के॰





मु॰ मीरविश्वनाथघाट]

नृत्य भैरव से अविमुक्त

भैरव जाने का मार्ग इस प्रकार है नृत्य भैरव से पश्चिम सरस्वती फाटक, ज्ञानवापी ~~होते हुए~~, ढुंण्ढि राज गलीहोते होते हुए राजराजेश्वर से सटे हुए दक्षिण बगल के अविमुक्तेश्वर मन्दिर में है। ~~अविमुक्त~~ भैरव है

अविमुक्तेश्वर ~~मन्दिर~~ भैरवायनमः

मन्दिर ~~मकान~~, नम्बर सी॰के॰ ३५/३१ मे है

मुहल्ला ढुंण्ढि राज गली]

दण्ड पाणी जी के दर्शन पूजन करने के पश्चात्, ग्यारह रुद्र भैरव यात्रा पूर्ण होता है। संकल्प छोड़कर संकल्प कहने वाले ब्राह्मण को

यथाशक्ति दक्षिणा देकर साधु
सन्त और संन्यासियों को फल
या मिष्ठान्न आदि का जल पान
कराकर ग्यारह रुद्र भैरवों का स्मरण
करते हुये अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक
यात्री अपने अपने घर जाते है।
ग्यारह रूद्र भैरव यात्रा करने वाले
नर नारियों के दुःख, संकट
दूर होजाते है। कैसा भी रोग हो,
रोग नष्ट होते है। एक यात्रा से
हो सके तो ग्यारह करना चाहिए
चूंकि अधिक से अधिक फल
प्राप्त होता है। उन्नाहिस बार यात्रा
करके शास्त्र और अपने अनुभव
के द्वारा लिखा गया है पृष्ठ

~~वृहत् काशी दर्शन में विस्तार से लिखा गया है।~~

हरीॐ तत्सत् भैरवार्पण मस्तु
हर हर महादेव ।

"दाहिने बते से नव दुर्गा दर्शन यात्रा

प्रातः स्नान करके धुला दुपट्टा

शुद्ध वस्त्र धारण कर भस्म, या मलयागिरी श्रीखण्ड

चन्दन का त्रिपुण्ड धारण करके रुद्राक्ष

का माला धारण करके, पूजा की

सामग्री, बिल्वपत्र, भस्म, लाल फूल

, एवं अबीर, ऋतु फल, गाजे वस्त्र

तथा गङ्गा जल, चढ़ाने के लिये

फुटकर पैसा साथमें लेकर चलें।

यात्रा करते समय में शिव-शिव मान-

-सिक जप करने से शिव शक्ति की

उपासना होजाती है।



दाहिनो बर्त से नव दुर्गा दर्शन यात्रा

जप करते हुए। हर हर महादेव शम्भो

काशी बिश्वनाथ गङ्गे। कीर्तन करते

हुये दुर्गा दर्शन यात्रा एक लाइन से

धीरे धीरे चलना चाहिए। जो यात्री

उत्तर में रहते है वह शैलपुत्री से प्रारम्भ करें। जो यात्री दक्षिण में रहते है,

उस यात्री को दुर्गा जी से प्रारम्भ करना

चाहिए। यह एक दिन की यात्रा है। कीर्तन करते हुये चलने से

असामाजिक तत्त्वों का भय नही रहता

और पैर में काँटा, शीशा आदि भी नहीं

चुभते है। दाहिने/बर्त से नव दुर्गा दर्शन

यात्रा बड़े उत्साह और प्रसन्नता के

अनुसार दाहिने बर्त से यात्रा प्रारम्भ

करें। आप के जन्म जन्मान्तर के पाप

से दुष्कर्म पाप मुक्त हो जाते हैं नव दुर्गा यात्रा करते है। शिवलोक को जाते



दाहिने बर्त से नव दुर्गा दर्शन यात्रा

शैल पुत्री तीर्थाय नमः वरुणा में

शैल पुत्री घाट है।

१ शैल पुत्री दुर्गा देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर

ए० ४०/११ में मुहल्ला शैल पुत्री

शैल पुत्री में शैलेश्वर आदि काशी

खण्डोक्त देव मन्दिर है सब

का दर्शन करें [ओंकार अन्तर्गृही

यात्रा में शैलपुत्री का वर्णन लिखा गया है।]

सिद्धे २ वागेश्वरी से। सिद्धेश्वरी जाने

का मार्ग यह है वागेश्वरी से लोहटिया

मैदागिनी २ पार्क के दक्षिण बगल से

पूर्व जाने वाली सड़क से आगे से दक्षिण

जाने वाली सिद्धेश्वरी गली में है।

सिद्धिदा माता दुर्गा देव्यै नमः [मकान

मन्दिर नम्बर सी०के० ८/२८ में मुहल्ला गुलाना

ला]

दाहिने बर्त से नव दुर्गा दर्शन यात्रा

शैलपुत्री से बागेश्वरी जाने का मार्ग इस प्रकार है शैल पुत्री से दक्षिण रेलवे सिटी स्टेशन के पश्चिम से रेललाइन ~~पार~~ व जी.टी रोड पार करके जैतपुरा होते हुए बागेश्वरी श्रद्धा भक्ति से उत्त होकर दर्शन, पूजा करें।

स्कन्द माता बागेश्वरी देव्यै नमः [मकान मंदिर नम्बर जे० ६/३३ में मुहल्ला जैतपुरा]

~~सिद्धे~~ बागेश्वरी से सिद्धेश्वरी जाने का मार्ग यह है बागेश्वरी से लोहटिया मे दगिनी २ पार्क के दक्षिण बगल से पूर्व जाने वाली सड़क से आगे से दक्षिण जाने वाली सिद्धेश्वरी गली में है।

सिद्धिदा माता दुर्गा देव्यै नमः [मकान मन्दिर नम्बर सी० के० ७/२८ में मुहल्ला गुलाला ला]



दाहिने वर्त से नव दुर्गा दर्शन यात्रा

सिद्धेश्वरी दुर्गा से ब्रह्मचारिणी दुर्गा जाने का मार्ग सिद्धेश्वरी से पूर्व काल भैरव व पाप भक्षेश्वर के दर्शन करके काल भैरव से पूर्व चौखम्भा। सब्जी मण्डि में पूर्व जाने वाली कपिल गली होते हुए ब्रह्मचारिणी दुर्गा पूर्वाभिमुख है।

ब्रह्मचारिणी दुर्गा देव्यै नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर के० २२/७२ में है मुहल्ला दुर्गा घाट]

ब्रह्मचारिणी दुर्गा से कात्यायनी दुर्गा जाने का मार्ग ~~है~~ ब्रह्मचारिणी दुर्गा से दक्षिण मंगला गौरी गभस्तीश्वर का दर्शन करके पत्नी टोला में शान्तेश्वर और शंकटा जी के दर्शन करने के पश्चात् आत्मावीरेश्वर में कात्यायनी दुर्गा

दाहिने बाते से नव ~~की~~ दुर्गा दर्शन यात्रा

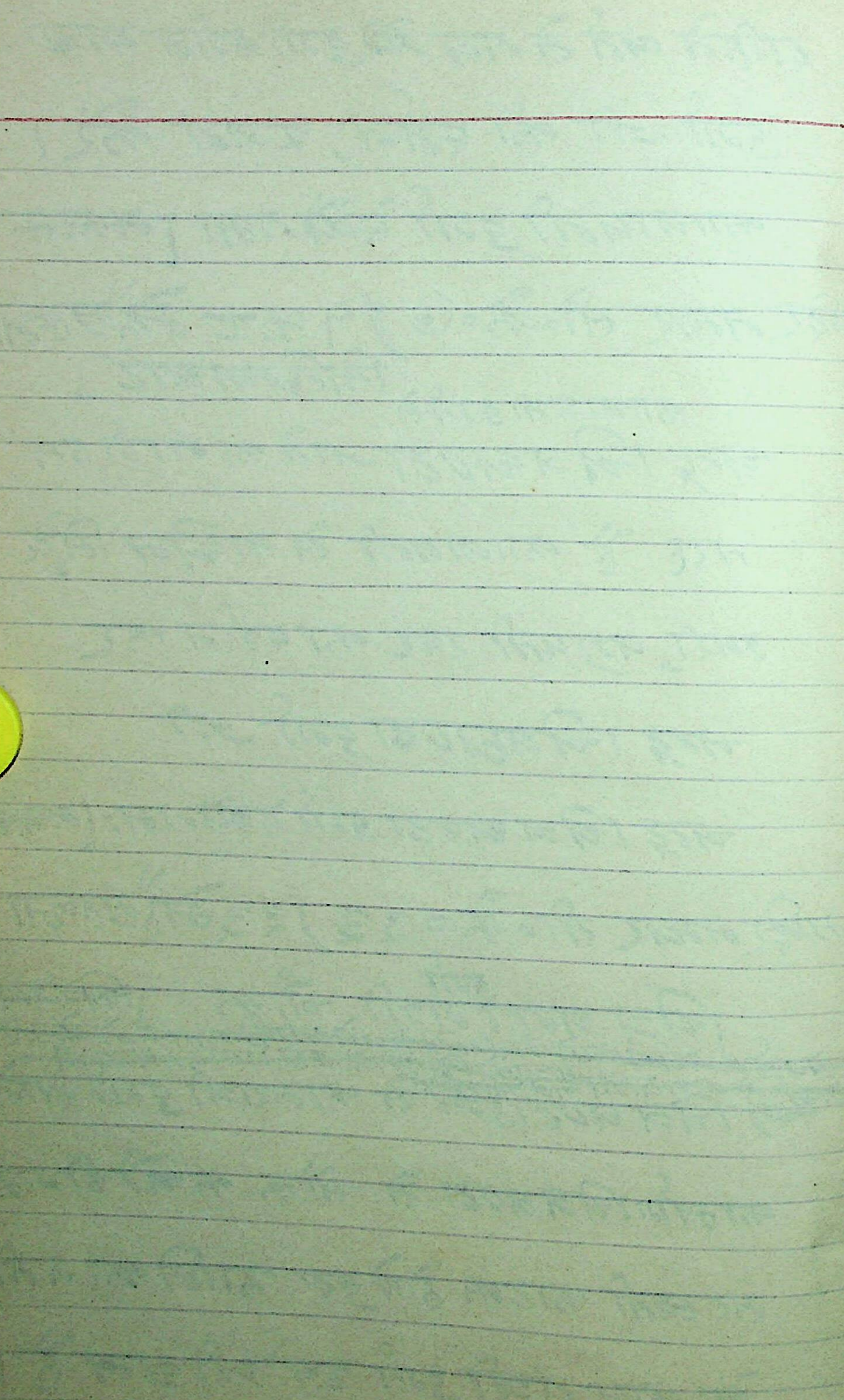
दुर्गा जी की दर्शन, पूजन करें।

कात्यायनी दुर्गा देव्यै नमः [मकान मन्दिर नम्बर सी॰के॰ ७/१५८ में है मुहल्ला सिन्धियाघाट]

कात्यायनी दुर्गा से चन्द्र चित्रघण्टा जाने का मार्ग इस तरह है कात्यायनी से पश्चिम सिद्धेश्वरी, पशुपती श्वर का दर्शन कर चन्द्र चित्रघण्टा दुर्गा जी

चन्द्र चित्र घण्टा दुर्गा देव्यै नमः [मकान मन्दिर नम्बर सी॰के॰ ३३/३३ में है मुहल्ला चित्र घण्टा दुर्गा गली, चौक]

चन्द्र चित्र घण्टा दुर्गा से कालरात्री दुर्गा जाने का मार्ग चित्रघण्टा से चौक कचौडी गली सरस्वती फाटक होते हुए कालिका गली में काल रात्री दुर्गा पूर्वाभिमुख है।



दाहिने वर्त से नव दुर्गा दर्शन यात्रा

कालरात्री दुर्गा देव्यैनमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर डी० ८) ३ में मुहल्ला कालिकागली]

कालरात्री ~~देवी~~ दुर्गा से पाश्चिम बगल में महागौरी अन्न पूर्णा है शुक्रेश्वर, कालराजेश्वर, अविमुक्तेश्वर एवं विश्वनाथ ~~आदि~~ जी का दर्शनकर और यन्त्रेश्वर, कुबेरेश्वर के दर्शन करने के पश्चात] महागौरी। अन्नपूर्णा जी की दर्शन करें।

महागौरी अन्न पूर्णा दुर्गा देव्यैनमः
[~~मकान~~ मन्दिर नम्बर डी० ९ ~~/~~ १७ में है मुहल्ला अन्न पूर्णा गली]

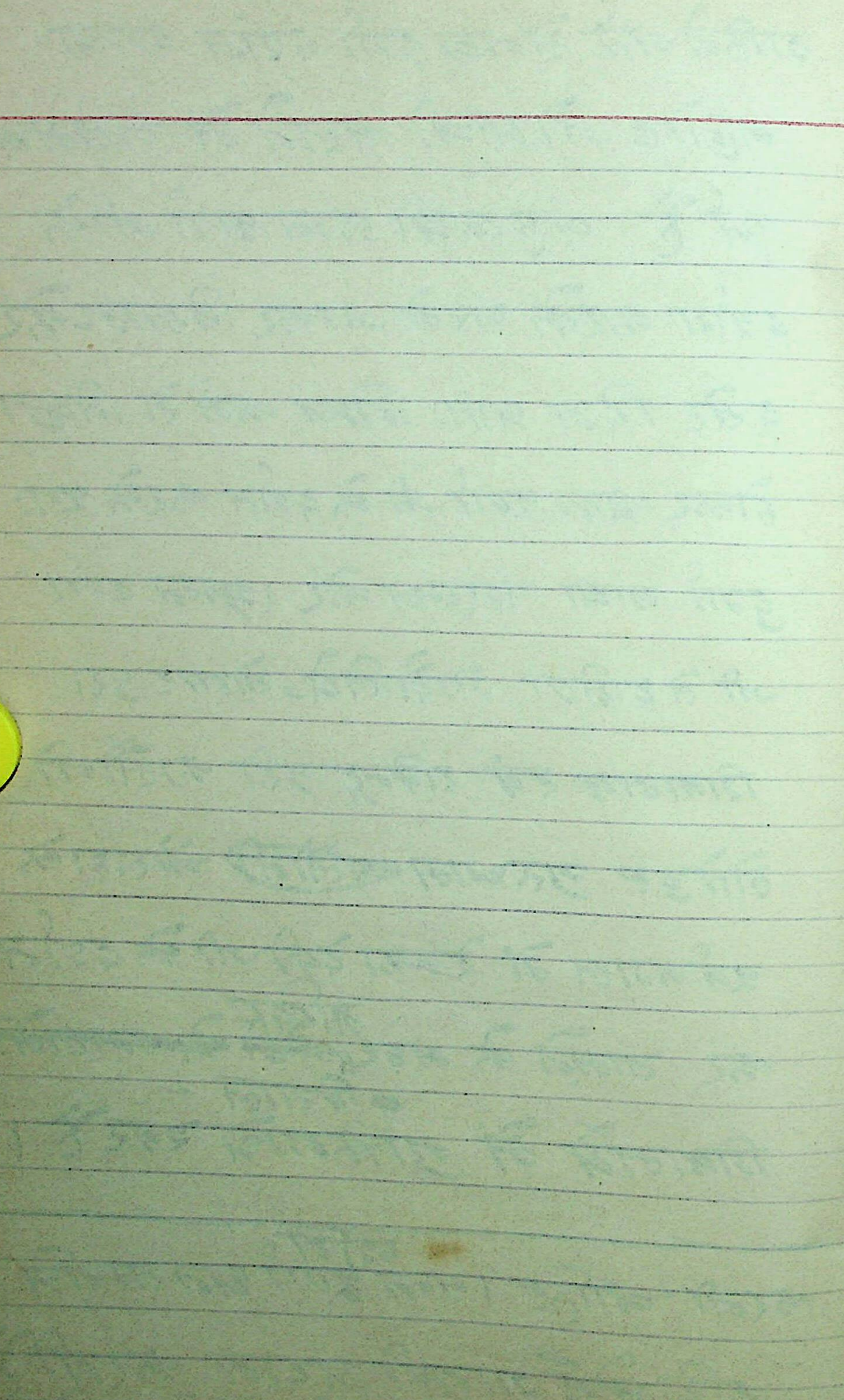
अन्न पूर्णा जी का दर्शन दोनो नवरात्रि में और प्रत्येक अष्टमी को दर्शन अपने परिवार एवं अपने कल्याण के लिए अनिवार्य दर्शन

दाहिने बगल से नव दुर्गा दर्शन यात्रा

नोट जो यात्री चलने में असमर्थ है वह यात्री अन्न पूर्णा जी के दर्शन करके घर में जाकर विश्राम करें। दूसरे दिन प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर अन्न पूर्णा जी के दर्शन करके पुनः दुर्गा यात्रा प्रारम्भ करें। अन्न पूर्णा जी से दक्षिण गोदौलिये-सोनार पुरा शिवालय एवं रवीन्द्र पुरी कालौनी होते हुए गुरुधाम चौमुहानी के पूर्व बगल में रेणुका देवी जी के दर्शन कर सामने के बड़े मन्दिर विशाल शिवालय में मुक्तिनाथेश्वर है।

करनी चाहिए। अन्न पूर्णा धन सम्पत्ति बुद्धि और शान्ती प्रदान करती है।

नवदुर्गा यात्रा काशी दर्शन में विस्तार से लिखा गया है।



दाहिने वर्त से नव दुर्गा दर्शन यात्रा

दर्शन, पूजन करके दुर्गा जी की श्रद्धा, भक्ति के साथ दर्शन कीजिए।

कूष्माण्ड दुर्गा देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर डी० २६/२ मोहल्ला दुर्गाकुण्ड]

नवरात्र में और प्रति दिन दर्शन, पूजा करने वाले नर, नारियों के दुःख विघ्न समूह को दूर कर दुर्गा जी उसे संपत्ति एवं सुमति प्रदान करती हैं। जो व्यक्ति दुर्गाकुण्ड में स्नान कर सारी दुर्गतियों को नष्ट करने वाली दुर्गा जी की पूजा करते है। उन नर, नारियों के नव जन्मों के पाप नष्ट होते है।

काशी में प्रयत्न पूर्वक छुट्टी लेकर नव दुर्गा दर्शन यात्रा करनी चाहिये।



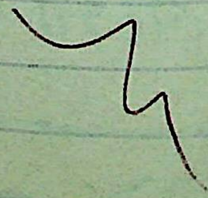
दाहिनेवर्त से नव दुर्गा दर्शन यात्रा

चूँ कि नव दुर्गा यात्रा करने वाले नर, नारियों को दुर्गा माँ अन्न, वस्त्र, धन तथा पुत्र, परिवार सुख - शान्ती देती है। और काशी वास में बिघ्न नहीं आता। दुर्गा माँ अन्त में विश्वनाथ जी से प्रार्थना करके मोक्ष की भिक्षा देती है अतः प्रयत्न करके नव दुर्गा यात्रा करें। नव दुर्गा दर्शन यात्रा सौ ग्यारह बार शास्त्रानुसार से यात्रा करने के पश्चात। लिखा गया है।

हरि ओं तत्सत. दुर्गार्पणम् अस्तु, हर हर महादेव।

मन्दिरों का जीर्णोद्धार, कीर्तन, और कथा की व्यवस्था करने वाले भक्तों के दुःख, संकट दूर होते हैं।





नव दिन तक प्रति दिन क्रम १ दुर्गा की दर्शन यात्रा

प्रत्येक दुर्गा की प्रति दिन दर्शन

अलग-२ दर्शन शास्त्रानुसार करने

से यात्रियों के सब मनो रथ पूर्ण

होते है।

शैलपुत्री दुर्गा देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर

ए० ४०/११ में मुहल्ला शैल पुत्री

ब्रह्मचारिणी दुर्गा देव्यैनमः [मन्दिर नम्बर के०२२/७२ में मुहल्ला दुर्गाघाट

चन्द्र चित्र घण्टा दुर्गा देव्यैनमः [मन्दिर नम्बर

सी० के० ३३/३३ में मुहल्ला चित्र घण्टा

दुर्गा गली चौक]

कूष्माण्डा दुर्गा देव्यैनमः [मन्दिर नम्बर

बी० २७/२ में मुहल्ला दुर्गाकुण्ड]

स्कन्द माता वागेश्वरी दुर्गा देव्यैनमः

मन्दिर नम्बर जे० ६/३३ में मुहल्ला –



क्रम से नव दिन तक नवों दुर्गा की दर्शन यात्रा करें।

जैतपुरा]

कात्यायनी दुर्गा देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर सी० के० ७/१५८ में है मुहल्ला - सिन्धियाघाट]

कालरात्री दुर्गा देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर डी० ८/३ में है मुहल्ला कालिका गली]

महागौरी अन्न पूर्णा दुर्गा देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर डी० ९/१७ में है मुहल्ला अन्न पूर्णा गली]

सिद्धिदा सिद्धेश्वरी दुर्गा देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर सी० के० ६/२८ में है मुहल्ला बुलानाला]

दोनो नवरात्र में अपने परिवार सहित दर्शन यात्रा करनी चाहिए। और सदा प्रति दिन अपने घर के समीप में



नव दिनतक प्राति दिन एक 1 दुर्गा दर्शन यात्रा करें।

देवी अतः शंकर जी के मन्दिर हो

तो उसी मन्दिर में जाकर दर्शन पूजन करें

इस प्रकार दर्शन पूजन करने वाले नर, नारियों

के घर में कलह, दरिद्रता असान्ति

नही होती। परिवार में सुख, सम्पत्ति

की बृद्धी होती है, दर्शन करने

वाले व्यक्ति को सम्मान, प्रातिष्ठा

~~और पद~~ की प्राप्ती होती है।

नमनवदुर्गा देवीयों की तर्पण विधी

इस प्रकार है, शैलपुत्री दुर्गा देव्यैनमः। ब्रह्मचारिणी दुर्गा देव्यैनमः। चित्रघण्टा

दुर्गा देव्यैनमः। कुष्माण्डा दुर्गा

देव्यैनमः। स्कन्दमाता देवी देव्यैनमः। कात्यायनी दुर्गा देव्यैनमः। कालरात्री दुर्गा देव्यैनमः। महागौरी अन्नपूर्णा देव्यैनमः। सिद्धिदा सिद्धेश्वरी दुर्गा देव्यैनमः।



काशी में नवग्रह दर्शन प्रदक्षिणा यात्रा

नव ग्रह दर्शन, पूजन प्रदक्षिणा यात्रा

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी ।

भानुः शशी भूमिसुतोबुधश्च ।

गुरूश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः,

सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु ॥

- - - - - - - - - -

पञ्चगङ्गा में स्नान करके वस्त्र पहिन त्रिपुण्ड्र टीका, माला आदि धारण करके शुद्ध ~~वस्त्र~~ और पवित्र मन से पूजा की सामग्री ~~साथ में~~ ~~नव ग्रहों को जो वस्तु चढ़ता है~~ ~~वह~~ एवं गङ्गाजल, पुष्प, अक्षत, दूर्वा वस्त्र, ऋतु फल, बिल्वपत्र, लड्डू चढ़ाने के लिये कुछ रेजगारी पैसा आदि सामाग्री साथ में लेकर शिव शिवनाम महामन्त्र का जप करते हुये पूजन सम्पन्न करें।

हर हर महादेव सम्भो काशी विश्वनाथ गङ्गे।

नवग्रह दर्शन यात्रा

कीर्तन करते हुये शनै-शनै यात्री चलते हैं।
मंगला गौरी के दर्शन, पूजन करने के पश्चात् गभस्ती श्वर के दर्शन, पूजन करके यात्रा प्रारम्भ करें।
(विवरण गभस्ती श्वर सूर्यनारायण भगवान के करकमलों से स्थापित है।)

१ गभस्ती श्वराय नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर के० ४/३४ में मुहल्ला मंगला गौरी]

गभस्ती श्वर अपने दर्शन, पूजा करनेवाले अनन्य भक्तों के ग्रह दुःख दरिद्रता चिन्ता एवं विघ्न दूर करते हैं। साथ ही नेत्र के रोग नष्ट होते हैं।

गभस्ती श्वर अपने दर्शन, पूजन उपासना करनेवाले भक्तों के सभी ग्रह शान्त कर देते है। गभस्ती श्वर से चन्द्रेश्वर जाने का मार्ग यह है गभस्ती श्वर से दक्षिण रामघाट पटनी टोला में ~~भमे श्वर के दर्शन करके~~ संकटा, सिद्धेश्वरी, पिताम्बर देवी जी के दर्शन करते हुए



नव ग्रह दर्शन यात्रा

इसके बाद सिद्धेश्वरी के बगल में चन्द्रेश्वर है।

2 चन्द्रेश्वरायनमः [मन्दिर, नम्बर सी॰के॰ 7/124 में है मुहल्ला सिद्धेश्वरी]

चन्द्रेश्वर के दर्शन करने वाले नर नारियों के अन्तः करण शुद्ध और निर्मल एवं ग्रह शान्त होते है।

चन्द्रेश्वर से मंगलेश्वर जाने का मार्ग यह है चन्द्रेश्वर से पूर्व संकठाघाट में है। मंगल विनायक के ऊपर कोशीप मन्दिर में है

3 मंगलेश्वरायनमः [मन्दिर, नम्बर सी॰के॰ 1/8. में है मुहल्ला संकटघाट में है।

मंगलेश्वर के दर्शन करने से सब कार्य मंगल होते है और मंगल ग्रह की पीड़ा शान्त होती है। मंगलेश्वर के दर्शन करने से अमङ्गल कार्य भी मंगल होते है।

बुधेश्वर पश्चिम बगल में है गङ्गा जी के मन्दिर के बगल में शंकर जी के



नवग्रह दर्शन यात्रा

बड़े मन्दिर में हैं।

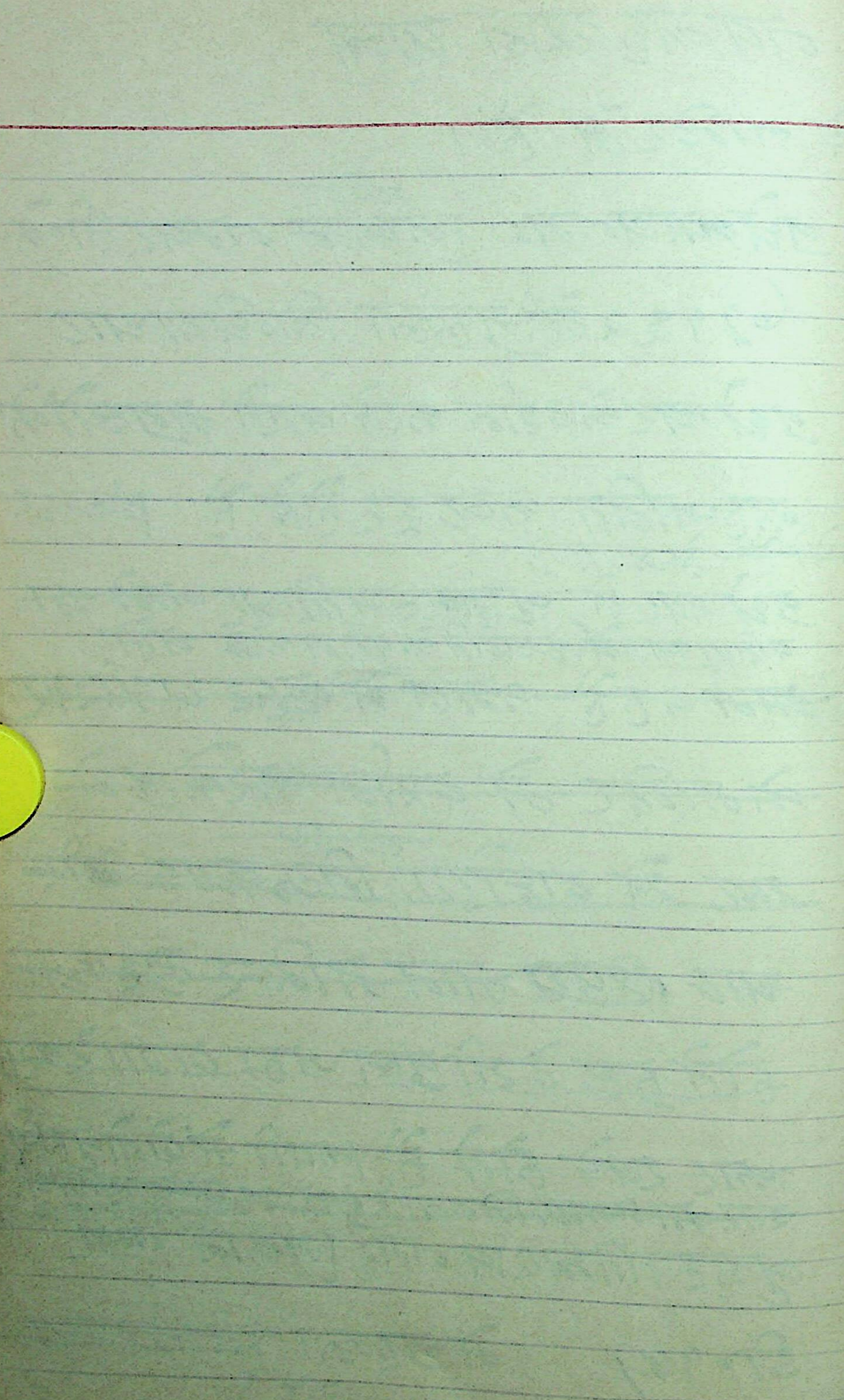
4 बुधेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर सी०के० 6/132 में है मुहल्ला सिन्धियाघाट

बुधेश्वर के दर्शन करने वाले मनुष्यों के अरिष्ट ग्रह, संकट ग्रहजनित कष्ट दूर होते हैं

बुधेश्वर से दक्षिण बगल में बृहस्पति के दर्शन करने चले।

बुधेश्वर से दक्षिण बिजकण्ड मीरघाट होते हुए देसी की पुल जहाँ, ताँगा रिक्सा खड़े होते हैं बगल में बृहस्पतीश्वर का विशाल मन्दिर है।

5 बृहस्पतिश्वराय नमः [मकान नम्बर डी०१५) में मुहल्ला दशाश्वमेध चौकी के उत्तर बगल में है] बृहस्पतीश्वर के दर्शन



नवग्रह दर्शन यात्रा

पूजन करने वाले नर, नारियों को सत बुद्धी, भक्ति, एवं ज्ञान देते है ग्रह शान्त होते है और इन के कृपा से भक्तों के रोग, संकट दूर होते है। बृहस्पतीश्वर से शुक्रेश्वर जाने का मार्ग इस प्रकार है। बृहस्पतीश्वर से उत्तर (विश्वनाथ गली) साक्षी विनायक होते हुये कालिका गली में ढौण्ढी विनायक के बगल में शुक्रेश्वर है।

६ शुक्रेश्वरायनमः [मन्दिर, नम्बर डी० ८/३० में है मुहल्ला कालिका गली] शुक्रेश्वर के दर्शन करने वाले भक्तों के रोग, चिन्ता, भय, दूर होते है और दर्शन करने वाले नर, नारियों के मनोरथ सिद्ध होते है। शुक्रेश्वर से पश्चिम अन्नपूर्णा गली में शनिश्चरेश्वर है शनिश्चरेश्वर मूर्ती उत्तराभी मुख है शनिश्चर मूर्ती के दर्शनकर मूर्ती के [illegible] में शनि के ऊपर है।

नवग्रह दर्शन यात्रा

शनिश्चरेश्वर है

6 शनिश्चरेश्वराय नमः [मन्दिर, नम्बर डी० ६/२ में है मुहल्ला अन्नपूर्णा गली।]

शनिश्चरेश्वर दर्शन, पूजन करने वाले स्त्री, पुरुषों के शनि ग्रह से शरीर में कष्ट कार्य में विघ्न एवं बाधा आदि सब कष्ट दूर होते है। परिवार में सुख एवं शान्ती होती है। शनिश्चरेश्वर से राहुेश्वर जाने का मार्ग यह है शनिश्चरेश्वर से उत्तर निकण्ठेश्वर गढ़वासी टोला होते हुए मणि कर्णिका गली में मणिकर्णिकेश्वर से सटे पूरब उत्तर बंगल शंकर जी के मन्दिर में केतुश्वर के बगल दूसरे मकान के है वरन्दा शिव मन्दिर में है।

८ राहूश्वराय नमः [मन्दिर, नम्बर सी० के० ८/१,३ में है मुहल्ला गढ़वासी टोला]

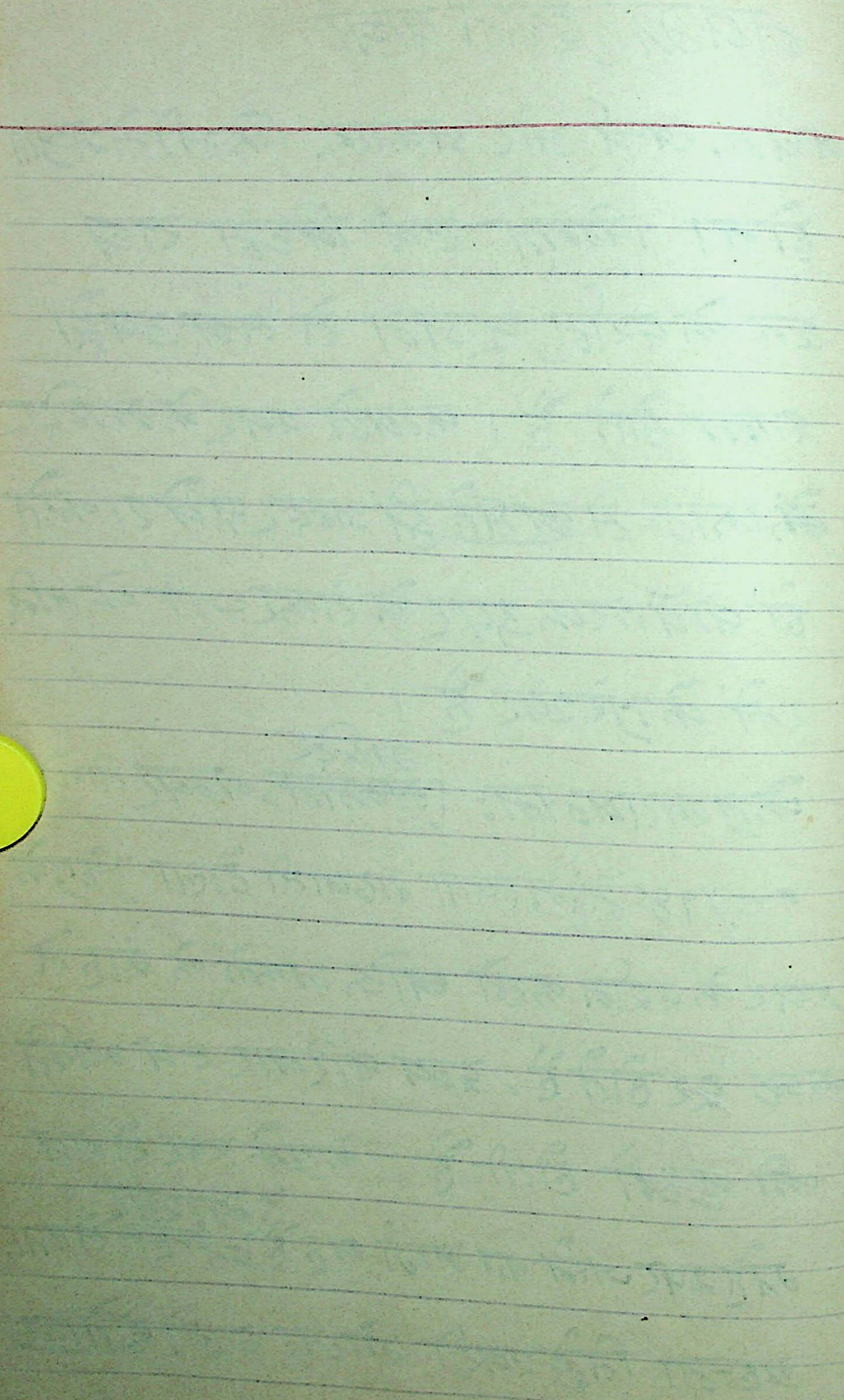
राहुेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले नर, नारियों के राहु ग्रह से पीड़ा, कष्ट –



नवग्रह दर्शन यात्रा

बधन, खर्च, और अकारन, किसी से शत्रुता होना, चिन्ता एवं विघ्न सब दूर हो जाते हैं और इन के दर्शन, पूजन से सभी उपद्रव शान्त होते है। कम्बले स्वर के मन्दिर में फाटक से घुसते ही अन्दर प्रवेश करते ही बांये तरफ ऊपर शंकर जी के मन्दिर में केतुकेश्वर है।

९ केतुश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर सी० के० ८/१४ में मुहल्ला गढ़वासी टोला] केतुकेश्वर के दर्शन करने से भक्तों के केतु ग्रह से शान्त होते है, द्रव्य, परिवार, एवं भक्ति की बढ़ती होती है। केतुकेश्वर से नव ग्रहेश्वर जाने का मार्ग यह है - केतुश्वर से उत्तर मुहल्ला सिद्धेश्वरी गोला गली होते हुए पटनी टोला होते हुए उपशान्तेश्वर



नवग्रह दर्शन यात्रा

को नव ग्रहेश्वर कहते है स्कन्द पुराण में वेद व्यास जी स्वयं लिखे है।

"भेद्रन्वराद्यात्तु धान्यमुपशान्त शिवो मृते॥ ॥४८॥

तस्य लिङ्गस्य संस्पर्शात् परां शान्तिं स मृच्छति।

उपशान्त शिवं लिङ्गं दृष्ट्वा जन्मशतार्जितम् ॥४९॥

त्यजेदघौघसोराशिं श्रेयोराशिं च विन्दति।
[काशीखण्ड अ. ५७ ~~श्लोक~~]



नवग्रह दर्शन यात्रा

नवग्रहेश्वरायनमः [मन्दिर ~~मकान~~, नम्बर सि०के०२१४ में मुहल्ला पटनी टोला]

नवग्रहेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले नर, नारियों के सब ग्रह जनित कष्ट, बाधा, पगला पना और शरीर में पीड़ा, घर में कलह, अशान्ति एवं शारीरिक, ~~सारीक~~, मानसिक कष्ट, तथा चिन्ता दूर होते है। नवग्रहेश्वर के दर्शन पूजन करने से भक्तों के मनोरथ सिद्ध ~~पूर्ण~~ होते है। नव ग्रह यात्रा का प्रत्यक्ष फल ~~कहा है~~। का वर्णन कर रहे है, ~~जिस~~ नर, नारियों को साढ़े साती हो या मार्केश हो, अथवा कोई भी ग्रह ~~शनि बाधा हो और वृहस्पती~~ अनिष्टकारक हो ~~निम्न स्थान में हो~~ तो ~~उस~~ समय ~~समय~~ - निकाल कर ~~छुट्टी लेकर~~ सप्रयत्न पूर्वक

नवग्रह दर्शन यात्रा

श्रद्धा भक्ति से युक्त, होकर ~~नव ग्रहों में कोई भी ग्रह स्वरूप स्थान~~ (अनिष्ट)

में हो प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर नवग्रह दर्शन, पूजन यात्रा करें। ~~एक~~ यात्रा से (नौबार क्रम से) नव यात्रा तक करना चाहिए। (यात्रा के पहले ऐसा संकल्प मैं करे।) नवग्रह यात्रा ~~करूँ~~ मैं करूँगा, अथवा ब्राह्मणों द्वारा यात्रा ~~करने से मम~~ करवाऊँगा ऐसा संकल्प करते ही शनैः-शनैः ग्रह शान्त हो जाते है। यात्री स्वयं यात्रा करने में असमर्थ हो तो वह यात्री ब्राह्मणों को वरणी करके यात्रा करने भेजें। ~~से भी वही फल मिलता है। नव ग्रह यात्रा केवल एक सवा २ घण्टा का है।~~

यह नवग्रह यात्रा तीन घण्टा का है।

मेरे साथ यात्रा करने वाले सब यात्रियों के ग्रह-

नवग्रह दर्शन यात्रा

शान्त हुवे (हो गये), जो यात्री रोगी थे (थे) रोग से निवृत्त होगये। जो यात्री घोर संकट में पड़े थे उनका संकट दूर होगया। जिन यात्री को रहने, भोजन आदि की व्यवस्था नही थी उन सब ~~को नवग्रह के कृपा से सब का सब व्यवस्था~~ (व्यवस्था) होगया यह नवग्रह यात्रा ~~एकसौ बार~~ (एक सौ एक बार) दर्शन यात्रा करने के पश्चात नवग्रह यात्रा ~~लिखी~~ (ऊपर पहले में) बतायी गई है। ~~नवग्रह यात्रा काशी~~ ~~बृहत दर्शन बृहत काशी दर्शन में बिस्तार से लिखा गया है।~~

राम प्रशाद पाण्डे जी को मार्केस था ग्रहों के कारण पाण्डे जी पागल जैसे हो गये थे मैं ने कहा आप



प्रति दिन प्रातः नित्य कर्म से
निवृत्त होकर प्रति दिन नवग्रह
दर्शन पूजन यात्रा ~~किजिये~~ कीजिए तो
आपका मार्केश ग्रह सब
शान्त ~~होवे~~ होंगे। पाण्डे जी प्रति दिन
नव ग्रह यात्रा करने लगे नव
ग्रह यात्रा करना प्रारम्भ करते
ही आराम होने ~~लगा कुछ दिन~~ गया।
~~के पश्चात स्वस्थ होकर पाण्डे~~
~~जी मेरे पास आये मैने कहाँ~~
~~आप का आयु बढ़ गई चन्द्र~~
~~वर्ष और स्वस्थ रहकर जोई~~
~~सच्चे~~ जोतिषी योंने आस्चर्य
~~प्रभावित~~
होकर चकित रहे। +गये
हरिॐ तत सत शिवार्पण मस्तु।



"अष्ट भैरव दर्शन प्रदक्षिणा यात्रा"

"वाराणस्यां भैरवो देवः संसार भयनाशनम्।
अनेक जन्मकृतं पापं दर्शनेन विनश्यति॥"

अर्थ- वाराणसी के भैरव देव, संसार के भय से मनुष्य मात्र को अभय दिलाते हैं तथा अनेक जन्म के किये हुये पाप दर्शन मात्र से ही विनष्ट कर देते हैं।

अष्टम्याञ्च चतुर्दश्यां रविभूमिजवासरे।
यात्राञ्च भैरवीं कृत्वा कृतैः पापैः प्रमुच्यते॥

[काशीखण्ड अध्याय ३१ श्लोक १४८]

अर्थ-



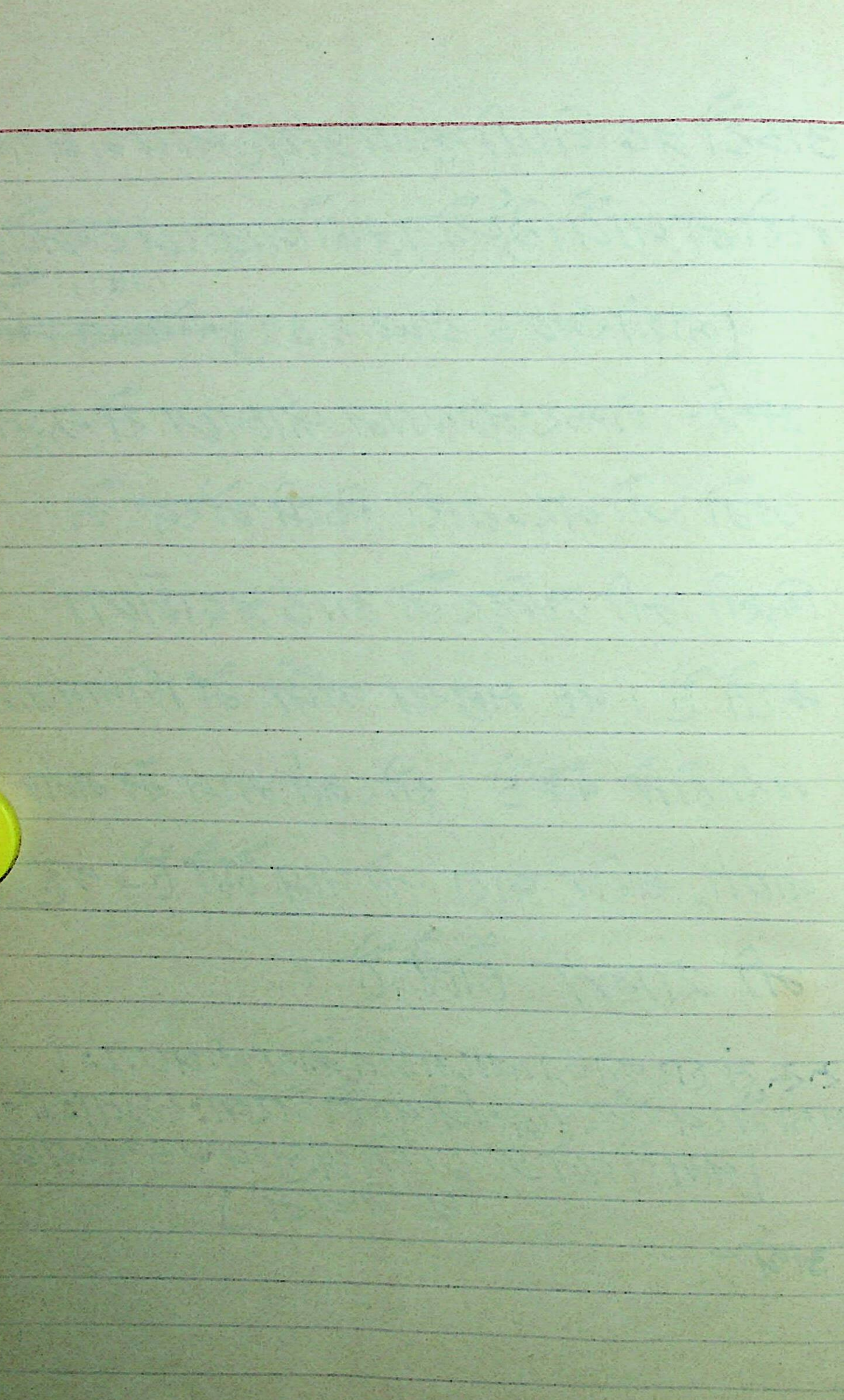
अष्टौ प्रदक्षिणी कृत्य प्रत्यहं पाप भक्षणम्
नरो न पापैर्लिप्येत् मनोवाक्काय सम्भवैः॥
॥१५१॥

[काशीखण्ड अध्याय ३१ ~~श्लोक १५१~~॥]

अर्थ- शंकर भगवान ब्राह्मणा से कहने लगे जो नर-नारी ~~किसी~~ भैरव के किसी भी मन्दिर में आठ प्रदक्षिणा करते है। वह मनुष्य पापों में लिप्यमान नहीं होते ~~हैं~~ है। और वर्तमान में मन, वाणी, शरीर द्वारा जो पाप होते है। वह भी शान्त होती है।
जाते

रुरू, संहार कालाख्या, अतित क्रोध भीषणाः।
महा भैरव खट्वाङ्ग वितष्टौ भैरवाः स्मृताः ॥८॥
[ब्रह्म वैवर्त पुराण के ब्रह्मखण्ड अध्याय
५ पाँच में]

अर्थ-



रुरुचण्डं चासीताङ्गं क्रोधश्च कपालिनः।
उन्मत्त भैरवश्च संहार: भीषणं
अष्टभैरव: ॥

अर्थ

असित अन्त अरु कहते है, चण्ड और उन्मत्त।
क्रोध कपाली पीषनरु संहारक भणिनत्त ॥

वृहज्ज्योतिषार्णव धर्मस्कन्धे ॥
उपासनाकाण्डे, ॥ भैरवों का उपासना काण्ड है, उसी में भैरवों का प्रमाण है।



"सदैवयस्य भक्तोभ्यो यमद्भुताःसुदारुणाः ।

परमाम्भीरुताम्प्राप्तास्ततोऽसौ — भैरवःस्मृतः ॥१४२॥

[काशी खण्ड अध्याय ३१ श्लोक १४२

अर्थ —

भैरवनाथ मोहाल में भैरवनाथ प्रसिद्ध ।
जिनकी सेवा के किए होत सिद्ध पर-सिद्ध ॥

यहि कलिकाल कराल में काशी के कोतवाल ।

कोतवाली आजहूँ वहीं भगवन — भैरव काल ॥

अष्ट भैरव दर्शन, पूजन प्रदक्षिणा यात्रा

अष्ट भैरव का प्रमाण शुक्ल यजुर्वेद
ब्रह्म वैवर्त पुराण में और
में. रूद्रतन्त्र में रुद्र जामल तन्त्र में
और शिव रहस्य में
शिव तन्त्र में शिव पुराण में एवं
स्कन्द पुराण में ~~काशी दर्शन में~~
भैरवों का प्रमाण प्राप्त है।
भैरवों का पूजन वैदिक, पौराणिक
एवं तान्त्रीक विधान से पूजा होता है।
पुजारी के योग्यता के अनुसार पूजा होती
है। दर्शन पूजन की सामग्री - अक्षत
, पुष्प, धूप, दीप एवं नैवेद्य, लड्डू -
~~[illegible]~~ वस्त्र (कपड़ा) - गङ्गा जल साथ
में लेकर पूजन करें और अपने भाई, बन्धु, मित्र साथ
भगवान के भक्तों के साथ कीर्तन
करते हुए ~~[illegible]~~ शिव- शिव नाम

अष्ट भैरव दर्शन

मन्त्र मनसे जपते हुये हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गङ्गे + कीर्तन करते हुये यात्रा प्रारम्भ करें।

चण्ड भैरवाय नमः [मकान मन्दिर नम्बर बी० २७/२। मेंमुहल्ला दुर्गाकुण्ड काली जी के बगल में चण्ड भैरव पूर्वाभीमुख है ।] चण्ड भैरव अपने भक्तों के दरिद्रता तथा मानसिक चिन्ता को दूर करते हैं।

3 असीताङ्ग भैरवाय नमः [मकान मन्दिर नम्बर के० ५२/३९। मेंमुहल्ला दारानगर धन्वन्तरी अमृत कुण्ड तीर्थ के बगल में असीताङ्ग भैरव पश्चिमाभीमुख है ।] में जल पान करके

असीताङ्ग भैरव दर्शन पूजा करने वाले नरनारियों के मनोरथ प्राप्त होता है पूर्ण करते है।

4 कपाल-लाट भैरवाय नमः [मकान, मन्दिर नम्बर ए०१/१२३। मेंमुहल्ला लाट भैरव स] कपाल भैरव अपने दर्शन से ही प्रसन्न होकर ब्रह्महत्या, और

अष्ट भैरव यात्रा में दर्शन
पूजन का फल लिखना शेष है।

अष्टभैरव दर्शन यात्रा

1 रुरु भैरवाय नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर ~~बी०~~ ~~बि०~~ बी० 4/42 में है मुहल्ला हनुमान घाट में रामेश्वर के मन्दिर में पूर्वाभीमुख है]
रुरु भैरव अपने दर्शन पूजन करने वाले भक्तों के शंकट, रोग, चिन्ता दूर करते हैं

2 चण्ड भैरवाय नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर बी० 27/2। में है मुहल्ला दुर्गाकुण्ड काली जी के बगल में चण्ड भैरव पूर्वाभीमुख है]
चण्ड भैरव अपने भक्तों के दरिद्रता तथा मानसिक चिन्ता को दूर करते है

3 असीताङ्ग भैरवाय नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर के० 52/39। में है मुहल्ला दारानगर धन्वन्तरी ~~अमृत कुण्ड तीर्थ~~ में जल पान करवे के बगल में असीताङ्ग भैरव पाश्चिमाभीमुख है।]
असीताङ्ग भैरव दर्शन पूजा करने वाले नरनारियों के मनोरथ ~~प्राप्त होता है~~ पूर्ण करते है।

4 कपाल-लाट भैरवाय नमः [~~मकान~~, मन्दिर नम्बर ए० 1/123। में है मुहल्ला लाट भैरव ~~स~~]
कपाल भैरव अपने दर्शन से ही प्रसन्न होकर ब्रह्महत्या, ~~[illegible]~~ और

सुरवीर बुद्धीमान

अष्ट भैरव दर्शन यात्रा
~~आदि~~ के पाप क्षिण ~~होते है~~ । करदेते है ।

५ क्रोधन भैरवाय नमः [~~मकान, नम्बर~~ मन्दिर नम्बर बी० २१/१२३ । मैं मुहल्ला कामाक्षा क्रोधन भैरव कामाक्षा देवी जी के मन्दिर में उत्तरा भी मुख है]
क्रोधन भैरव के दर्शन से पुत्र पौत्र की प्राप्ती होती है ।

६ उनमत्त भैरवाय नमः [~~मकान~~ मन्दिर, नम्बर बी० २१/१२६ मैं मुहल्ला कामाक्षा उनमत्त भैरव बटुक भैरव से सटे हुए दक्षिण बगल के भैरव मन्दिर में काशी खण्ड के उनमत्त भैरव आदि भैरव के नाम से ~~पूजाती पूजाते~~ प्रसिद्ध है । अतः उनमत्त भैरव पश्चिमाभी मुख है ।

अ उनमत्त भैरव अपने भक्तों के अज्ञान, अविद्या और अगुण को हर लेते है, साथही बुद्धी प्रदान करते है ।] पञ्चकोसी के मार्ग में जो ~~[illegible]~~

उन्मत्त भैरव है वह तो
ब्रह्मवैवर्त पुराण ~~के~~ काशी
रहस्य के उन्मत्त भैरव है।

अष्ट भैरव दर्शन यात्रा

७ संहार भैरवायनमः [मन्दिर नम्बर ए० १) ८२। में मुहल्ला गाय घाट पाटन दर्वाजा में संहार भैरव हनुमान जी के मन्दिर में उत्तराभीमुख है।

संहार भैरव अपने उपासना करनेवाले भक्तों को कष्ट देनेवाले मनुष्यों को दण्ड मार कर काशी से बाहर निकाल देते है।

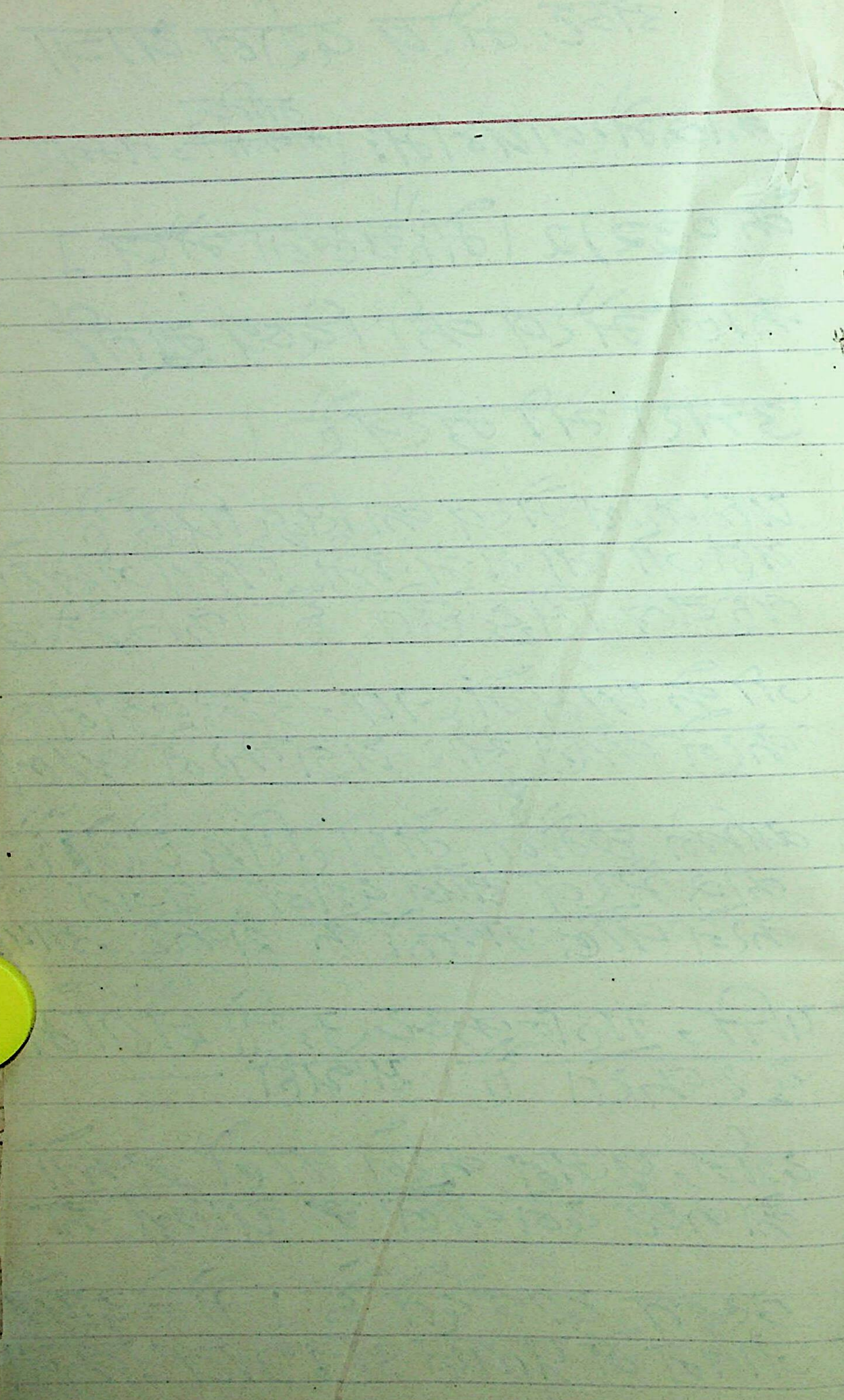
८ भीषण भूतभैरवायनमः [मन्दिर नम्बर के० ६३/२८ में मुहल्ला भूत-भैरव जोगी सब्बे रवर से बगल के भैरव मन्दिर में भूत भैरव उत्तराभीमुख है। भीषण भैरव अपने भक्तों को कष्ट देने वाले भूत, पीशाच प्रेत, तथा डाकिनी, साकिन, पीशाच काशी से दूर भगा देते है। अपने भक्तों को धन जन देकर सुखी करते है।



अष्ट भैरव दर्शन यात्रा

कालभैरवायनमः [मन्दिर मकान, नम्बर के० ३२/२। मेंहुँ मुहल्ला भैरव]
काल भैरव की। दिव्य मूर्ती उत्तरा भी मुख है।

यह काल भैरव का सिद्ध पीठ है यहाँ जो भी शुभ कर्म किया जाता है वह सब सिद्ध होते है। कालभैरव जी के पास में जप, अनुष्ठान करने वाले और यज्ञ करने वाले व्यक्ति छः मैहिना में ही सिद्ध होते है। काल भैरव अपने दर्शन, पूजन करने वाले भक्तो के संकट, आपत्ति, महान् कष्ट उसी क्षण में दूर करते है। साथही दर्शन, पूजन करने वाले भक्तों को कष्ट देने वालों चोरों को तुरन्त दण्ड देते है। मैंने अपने जीवन में प्रत्यक्ष अनुभव किया आज भी प्रत्यक्ष देखने में आता है



7

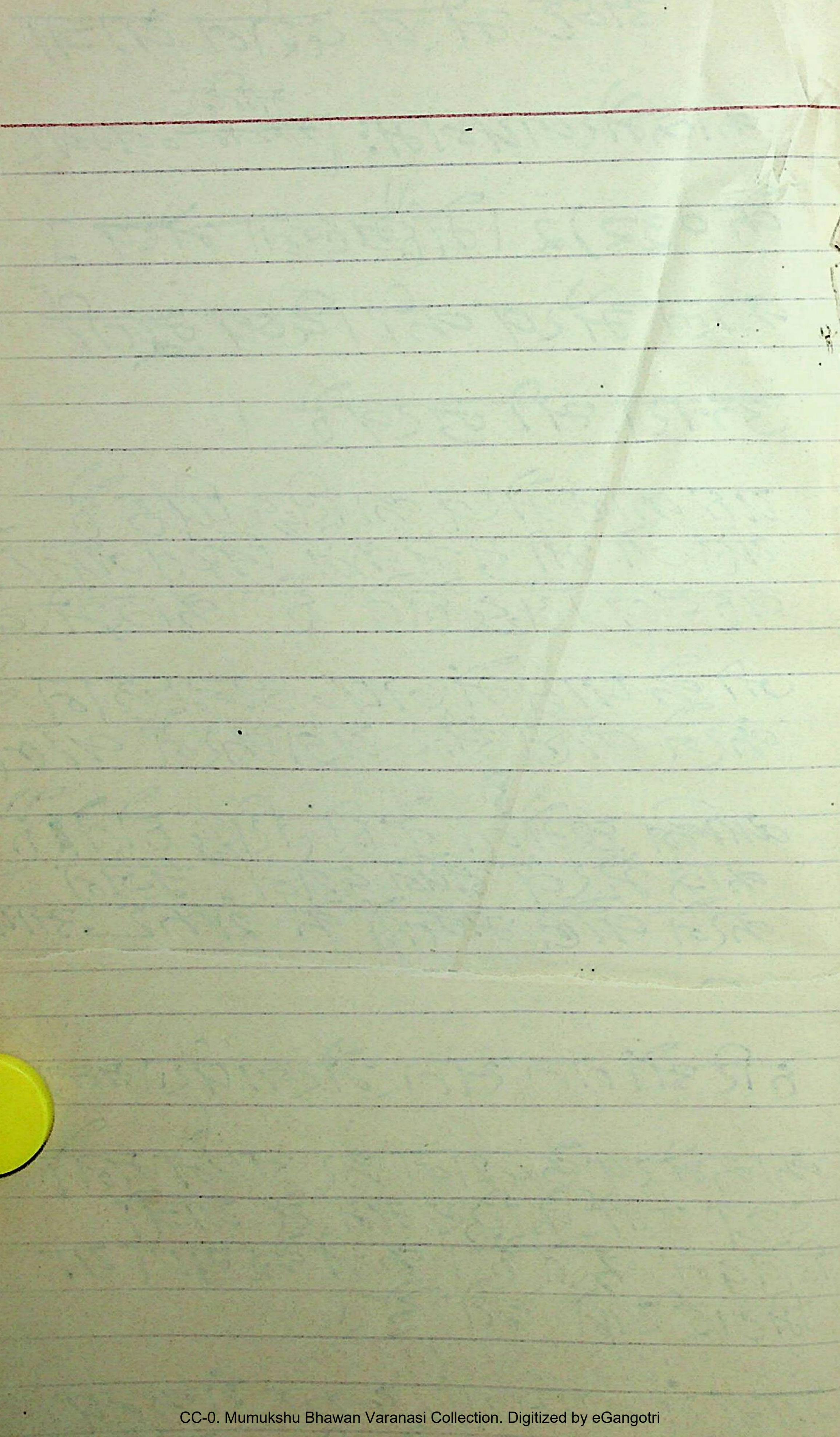
देकस्ते है। ~~यात्री~~ अपने पापों के प्रायश्चित कर प्रसन्नता पूर्वक यात्री भैरवों के स्मरण करते हुए। यात्री धीरे-धीरे अपने घर जाते है। दूसरे दिन यात्री साधु ब्राह्मण, शिव योगीयों को भोजन कराते है।

निवृती मार्ग के साधु माहात्मा और संन्यासियों को ~~मधु आदि~~ श्रद्धा से मधुकरी देने वाले नर नारियें

हरि ओं तत सत भैरवार्पणमस्तु

काल भैरव के दर्शन कर अपने मनोरथ पूर्ती के लिए मन से यात्री निवेदन करते है। कुत्ते को गुण या मिठाई खाने देते है।

→ दूध, मिठाई फल आदि देकर साधु सन्यासियों देकर शंकल्प छोड़कर ब्राह्मण को सीधा, दक्षिणा



देकरते है। अपने पापों के प्रायश्चित कर प्रसन्नता पूर्वक यात्री भैरवों के स्मरण करते हुए। यात्री धीरे-धीरे अपने घर जाते है। दूसरे दिन यात्री साधु ब्राह्मण, शिव योगीयों को भोजन कराते है।

निवृती मार्ग के साधु माहात्मा और संन्यासियों को श्रद्धा से मधुकरी देने वाले नर नारियें के प्राति, तथा भोजन कराने वाले के प्राति शिव-भैरव प्रसन्न होते है। भोजन कराने वाले के सब कार्य सिद्ध करते है, साथ ही उनका सब व्यवस्था कर के उनको काशी



बास कराते है। (काशीवास करने
वाले नर, नारियों को कष्ट देनेवाले
मनुस्यों को भैरव के गण दण्डा
मार कर अभिमान को नष्ट करते
है। उस को काशी खण्ड में लिखा
है, दण्डा ~~मारकर~~ मारते है, जो उन-
के ~~सब~~ कार्य में विघ्न करते है।
~~यदि~~ पापी गुण्डा होतो उस को काशी
से निकाल देते है।

काशी में काल भैरव ही अपना
आठ रुप धारण करके काशी की
रक्षा के लिए, आठों दिशाओं में
भिन्न-भिन्न नाम से रहकर काशी
की रक्षा करते है, (यह अष्टभैरव) ~~वह~~ भैरव काशी
बासीयों के रक्षा करते है। अष्टभैरव
के आठ बार यात्रा करनी चाहिये।



इतना ही नहीं ~~काशी में क्षेत्र~~
~~ब्रह्मवैवर्त पुराण~~, काशी रहस्य,
शिवपुराण एवं स्कन्द पुराण
शिव रहस्य, पद्म पुराण
में लिखा है, कि काशी में क्षेत्र
संन्यास लेकर काशी वास करते
है। ~~गङ्गा की सेवा स्नान, मा~~
~~दर्शन, एवं काशी की यात्रा~~
~~शास्त्र विधी से करते है~~,।
~~शिव पूजा नित्य करते हुए~~
निरन्तर ~~का शिव पूजा~~
-शिव
~~और~~ शिव, नाम स्मरण
करते है। उन मनुष्यों के
आगे, पीछे ~~मे~~ । शिवजी के
गण साथ में चलते है, सब
रक्षा, एव सुरक्षा करते है,
प्रकार के ~~व्यवस्था~~ करते है।

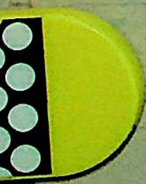


और काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास करने वाले व्यक्ति को जब तक जीवित रहता है, तब तक शिव जी के गण उन की रक्षा करते है। स्कन्द जी कहते है, जो काशी क्षेत्र की बराबर यात्रा करते हुए शिव पूजा करते हुये करता है, उन नर-नारियों को नित्य गुरु जी भोजन, आवास और सत सङ्ग अन्न पूर्णा जी सब का व्यवस्था करती है।

काशी में आज भी १० हजार मन्दिर स्थित है। पुराणों में काशी में

काशी वास करने से सब कष्ट शंकट दुर होजाते है ।

स्कन्द पुराण में लिखा है कि
काशी की यात्रा करने वाले
मनुष्यों को पद - पद में अश्वमेध
यज्ञ का फल उपलब्ध होता है।
प्रणव ऋषि कह रहे है - कि जिनके
शरीर में असाध्य रोग लगा हो,
भारी संकट आया हो, और बलवान
शत्रु हो ऐसे स्थिती में ~~अच्छ~~
काशी में आकर काशी की यात्रा करें
~~और वह यात्रा आठ बार करने~~
काशी वास करना चाहिये।
~~से सब रोग शोक दुःख शत्रु~~
~~दूर होते है।~~
पुराणों, वेदो में उपपुराणों
मे धर्म शास्त्रों में काशी में
एक गौरव, मन्दिरों का वर्णन
मिलता है।



"दहिने प्रांत से अष्ट भैरव दर्शन यात्रा"

~~दाहिने प्रांत से~~ अष्ट भैरव यात्रा ~~करने से~~ चार घण्ट। में ही यात्रा पूर्ण होता है। दहिने प्रांत से अष्ट भैरव यात्रा इस प्रकार से है। दक्षीण में रहने वाले नर, नारि चण्ड भैरव से यात्रा प्रारम्भ करें। उत्तर में रहने वाले यात्री लाट भैरव से यात्रा प्रारम्भ करें। यात्रियों के सुविधा के लिए यात्रा में सरल और संक्षिप्त बना कर लिखा गया है।

चण्ड भैरवाय नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर बी० २७/२। में है मुहल्ला दुर्गाकुण्ड]

चण्ड भैरव से रुरु भैरव जाने का मार्ग इस प्रकार है चण्ड भैरव से पूर्व रविन्द्र

रूरू भैरव से उन्मत्त भैरव
जानेका मार्ग इस प्रकार है -
रूरू भैरव से पश्चिम भेलूपुर
कामाक्षा होते हुये, बटुक भैरव
के मन्दिर के बगल में है।

पूरी काश्मोरी, शिवाला होते हुये
हनुमान घाट में तुलसी के हनु
मान जी के सामने भैरव मन्दिर
में है। रूरू भी भैरव है।
रूरू भैरवाय नमः [मन्दिर मकान
नम्बर बी० 4/42 में मुहल्ला
हनुमान घाट]

कामाक्षा] क्रोधन भैरव से

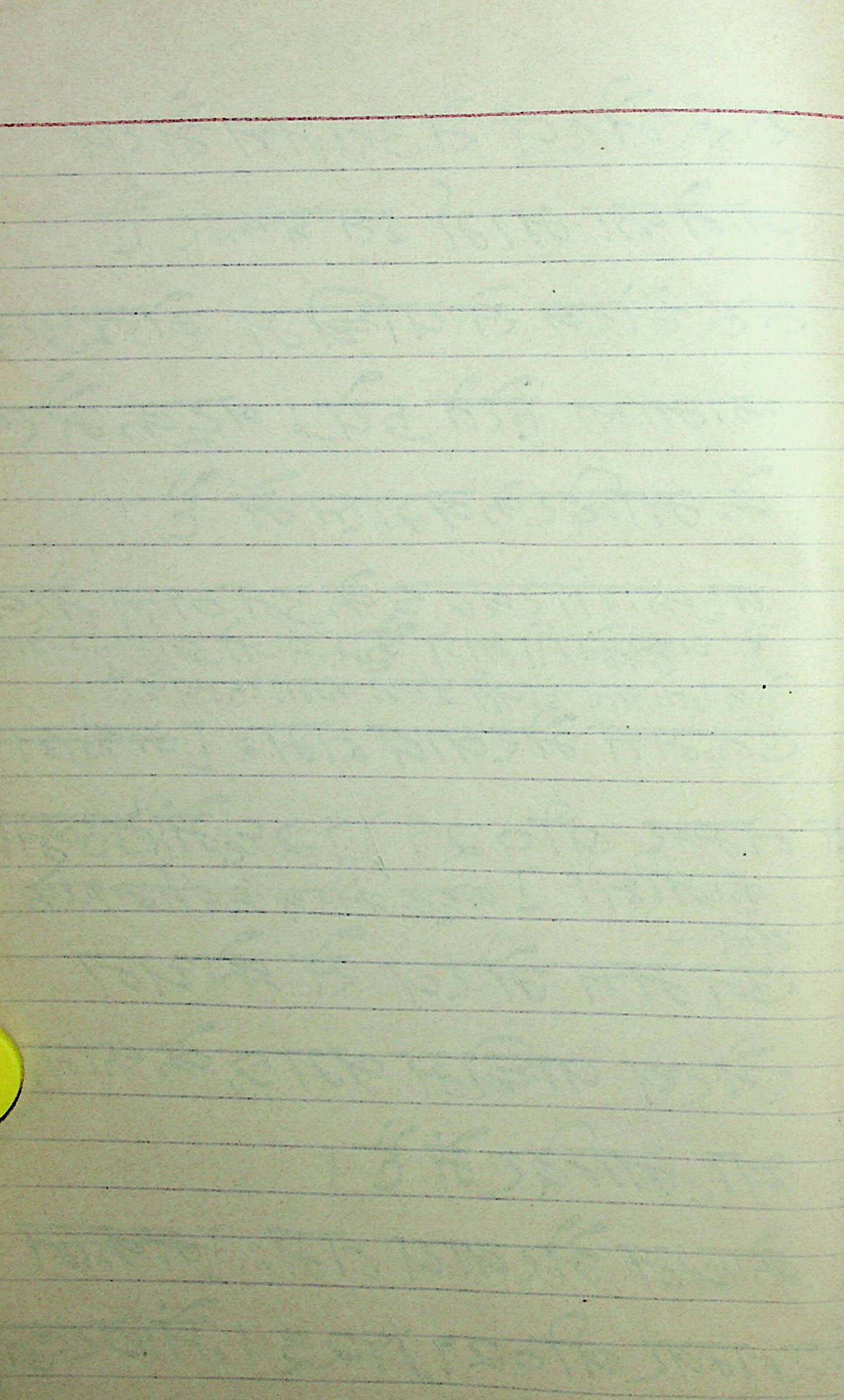
रूरू भैरव से उन्मत्त भैरव जानेका मार्ग इस प्रकार है - रूरू भैरव से पश्चिम भेलूपुर कामाक्षा होते हुये, बटुक भैरव के मन्दिर के बगल में है।

यह काशीखण्ड के उन्मत्त भैरव है पञ्चक्रोशी मार्ग में जो उन्मत्त भैरव है वह तो ब्रह्म वैवर्त पुराण काशी रहस्य के है।

3 उन्मत्त भैरवाय नमः [मकान मन्दिर नम्बर बी० २१/१२६ में मुहल्ला कामाक्षा] बटुक भैरव के दर्शन करके चले -

उन्मत्त भैरव से क्रोधन भैरव पश्चिम बगल के कामाक्षा देवी के मन्दिर में है।

4 क्रोधन भैरवाय नमः [मकान मन्दिर नम्बर बी० २१/१२३। में मुहल्ला कामाक्षा] क्रोधन भैरव से



भूत भैरव जाने का मार्ग यह है
क्रोधन भैरव से लक्सा रोड.
बाँस फाटक, कर्णघण्टा, सप्त-
सागर, ज्येष्ठेश्वर के दर्शन करते
हुये भूत भैरव का दर्शन करें।

५ भीषण भूत भैरवाय नमः [
[~~मकान~~ मन्दिर नम्बर के ० ६ ३) २ चा में है
मुहल्ला भूत भैरव] भूत भैरव
से असीताङ्ग भैरव जाने का रास्ता
इस तरह है. भूत भैरव से उत्तर
मैदागिनी, दारानगर होते हुए
महाकालेश्वर के ~~मोहल्ले में~~ मृत्युंजय- दर्शन कर अमृत-
कुण्ड के पास में है।

६ असी ~~ता~~ताङ्ग भैरवाय नमः [मन्दिर
[~~मकान~~ नम्बर के ० ५ २) ३ ६ । में है



मुहल्ला दारानगर] असीताङ्ग
भैरव से लाट भैरव जाने
का रास्ता यह है। असीताङ्ग
भैरव से उत्तर गोल-
गड्डा, बाराणसी, सिटी रेलवे
स्टेशन, के पूर्व गेट से लाट
भैरव कपाल मोचन तीर्थ
के उपर में है।

6 कपाल स्तम्भ लाट भैरवाय नमः [मन्दिर
[~~मकान~~ नम्बर ए० 1/123 | में है
मुहल्ला लाट भैरव]
लाट भैरव से संहार भैरव
जाने का मार्ग यह है, + उसी मार्ग
से गोलगड्डा मच्छोदरी होते
हुये गायघाट पाटन दरवाजा
हनुमान जी मन्दिर में है।



संहार भैरवाय नमः [मकान मन्दिर नम्बर ए०१/८२। मेंमुहल्ला गाय घाट] संहार भैरव से काल भैरव जाने का मार्ग यहहै संहार भैरव से पश्चिम भैरव मुहल्ले में काल भैरव जी के मन्दिर में है।

काल भैरवाय नमः [मन्दिर नम्बर के० ३२/२। मेंमुहल्ला काल भैरव] काल भैरव जी का दर्शन, पूजन करने के पश्चात दाहिने हाथ से अष्ट भैरव दर्शन यात्रा पूर्ण होताहै साधु, सन्त, माहात्मा एवं सन्यासियों को जल पान दे फल, मिष्ठान्न जल पान करके ~~आदि देकरके~~ कुत्ते को गुआ आदि ~~मिष्ठा~~ मीठा खाते देते के पश्चात।



संकल्प कर

संकल्प छोड़कर संकल्प बोलने वाले ब्राह्मण को यथाशक्ति दक्षिणा दें। संकल्पबोलने वाले ब्राह्मण के अभाव में स्वयं संकल्प बोलकर उस समय जो ब्राह्मणउपस्थित हो, उन को दक्षिणा दें। भैरवों का स्मरण करते हुए अपने २ अपने घर में जाकर विश्राम करें। चूंकि भैरव यात्राकरने से स्थूल पापशान्त होते है। ओर विशेषता यह है की अरिष्ट ग्रह भी शान्त होते है। यात्री अपने, अपने पापों का प्रयाश्चित्त करके घर जाते हैं।

हरि ॐ तत्सत् — भैरवापेणमस्तु

हर हर महादेव।

विवरण -

अष्ट भैरव और ११ रुद्र भैरव
दाहिने वार्ता से एक राम्य प्रदक्षिणा
यात्रा

१— चण्ड भैरवाय नमः [दुर्गा कुण्ड के पर

२- रुद्र भैरवाय नमः [दुर्गा जी के मन्दिर में
३- रुरु भैरवाय नमः [हनुमान घाट पर
४- केदारेश्वर भैरवाय नमः [केदारेश्वर के मन्दिर में

५- बटुक भैरवाय नमः [कामाक्षा
६- उन्मत्त भैरवाय नमः बटुक भैरव के मन्दिर के दक्षिण बगल
७ क्रोधन भैरवाय नमः [कामाक्षा देवी के मन्दिर में
८ अष्टाङ्ग भैरव [साम्बादित्य से दक्षिण बगल की गली में भैरव मन्दिर सूर्य कुण्ड]

९- पक्षे भैरव [आदि विश्वनाथ जी के मन्दिर में
१० आसा भैरवाय नमः [आस भैरव

११ भीषण भूत भैरव [भूत भैरव जो ओंकाल गौरी के पास में
१२ काल भैरव [भैरव मुहल्ला में

१३ असिताङ्ग भैरव [मृत्युञ्जय अमृत कुण्ड के बग

१४ कपाल भैरवाय नमः [लाट भैरव

१५-संहार भैरवाय नमः। गाय घाट

१६ विन्दु माधव भैरवाय नमः।

१ - विन्दु माधव के मन्दिर में

१७ आनन्द भैरवाय नमः। मंगला गौरी जी के दक्षिण बगल में है

३-

४-

१८ नृत्य भैरवाय नमः। मीर घाट हनुमान जी के दक्षिण बगल में है।

५-

६-

१९ अविमुक्त कि भैरव। अविमुक्ते श्वर के मन्दिर मे।

८-

९

राजराजेश्वर के दक्षिण बगल के मन्दिर में है (मु.ढुण्ढि राज गली)

१०

११ अन्नपूर्णा विश्वनाथ जी के

१२ दर्शन करने के पश्चात आपका

१३ यात्रा पूर्ण हुआ। संकल्प छो ड़कर

१४ ब्राह्मण को सीधा दक्षिणा देकर अपने २ घर चले जाते है।

18.

अथ कालभैरवाष्टकम्

देवराज सेव्यमान- पावनांघ्रि- पङ्कजम्

व्यालयज्ञ- सूत्रमिन्दु -शेखरं कृपाकरम् ।

नारदादि- योगिवृन्द- वन्दितं दिगम्बरम्

काशिकापुराधिनाथ- कालभैरवं भजे ॥१॥

भानुकोटि- भास्वरं भवाऽब्धितारकं परम् ।

नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।

कालकाल मम्बुजाक्ष- मक्षशूलमक्षरम्

काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ २॥

~~भुक्ति - मुक्ति- दायकं प्रशस्त~~

शूलटङ्क- कालदण्ड-पाणिमादिकारणम्

श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।

भीम विक्रमं प्रभुं बिचित्रताण्डवप्रियम्

काशिकापुराधिनाथ- कालभैरवं भजे ॥३॥

भुक्ति-मुक्ति-दायकं प्रशस्तचारु विग्रहम्

भक्तवत्सलस्थितं समस्तलोकविग्रहम् ।

विनिक्वणन् मनोज्ञहेम- किङ्किणीलसत्कटि

काशिकापुराधिनाथ-कालभैरवं भजे ॥४॥

धर्मसेतु-पालकं त्वधर्ममार्ग-नाशकं
कर्मपाश-मोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्ण-शेषपाश-शोभिताङ्ग-मण्डलं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥५॥

रत्नपादुकाप्रभाभिराम-पादयुग्मकम्
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं
काशिकापुराधिनाथ-कालभैरवं भजे ॥६॥

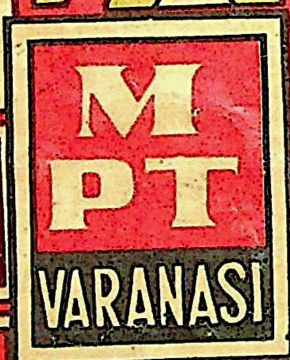
अट्टहास-भिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिम्
दृष्टिपात-नष्टपाप-जालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं
काशिकापुराधिनाथ-कालभैरवं भजे ॥७॥

भूतसङ्घनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम् ।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं

काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥८॥

कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं
ज्ञान-मुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्द्धकम् ।
शोक-मोह-दैन्यलोभ-पाप-तापनाशनं
ते प्रयान्ति कालभैरवांघ्रिसन्निधिं ध्रुवम् ॥९॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं कालभैरवाष्टकं समा
समाप्तम् ।


M
PT
VARANASI